सत्यनाम

सुरति+योग

(आध्यात्मिक त्रैमासिक पत्रिका)

सत्यनाम, सत्यसुकृत, आदि अदली, अजर, अचिन्त, पुरुष, मुनिन्द्र, करुणामय, कबीर, सुरति योग संतायन, धनी धर्मदास, वचन वंश चुरामणि नाम, सुदर्शन नाम, कुलपति नाम, प्रमोध गुरु बालापीर, केवल नाम, अमोल नाम, सुर्त सनेही नाम, हक्क नाम, पाक नाम, प्रगट नाम, धीरज नाम, उग्रनाम, दयानाम, पंथ श्री गृन्धमुनि नाम साहब, पंथ श्री प्रकाशमुनि नाम साहब की दया, चार गुरु वंश ब्यालिश की दया, सर्व संतों की दया-

वर्ष-18, अंक-2, कबीर संवत् 614 (वि. सं. 2069) जुलाई, अगस्त, सित. 2012

शब्द रमैनी

धर्मदास तुम पंथ उजागर, अरपो दल परसो सुखसागर ।
चन्दन चौका रचो बनाई, सतसुकृत जहां बैठे आई ।
सतबारी के फूल मंगाया, सो सतगुरु को आन चढ़ावा ।
धर्मदास उठ बिनती कीन्हा, हो सतगुरु हम तुमको चीन्हा।
जो तुम कहो मानलेउं सोई, तुम गुरु छोड़ और नहिं कोई ।
कहें कबीर सुनो धर्मदासा, बीरा नाम करो परकाशा।

प्रधान संपादक :
श्रीमती सरोजिनी गबेल
एम.ए. हिन्दी साहित्य, दर्शन शास्त्र, एम.फिल दर्शन

संपादक :
महंत डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

कार्यकारी एवं सह सम्पादक :
महंत पुरुषोत्तम दास
श्रीमती नलिनी गबेल

प्रबंधक :
प्रशांत शर्मा
अचिन्त दास

प्रकाशक :
श्री सदगुरु कबीर धर्मदास साहब
वंशावली प्रतिनिधि सभा
दामाखेड़ा, जिला-रायपुर (छ.ग.)

मुद्रक :
छत्तीसगढ़ ऑफसेट
रायपुर (छ.ग.)

कम्प्यूटर टाइप सेटिंग :
प्रकाश कुँज
कटोरा तालाब, रायपुर (छ.ग.)

एक प्रति
मूल्य 15.00 रु. मात्र

अनुक्रमणिका

आलेख **पृष्ठ**

लेख

- धर्मनी आमिन के वचनों ..... पंथ श्री गृन्धमुनि नाम साहब 03
  में सारग्रहिता
- गुरु कृपा ..... भोजराय दास 08
- कबीर साहब के अनमोल दोहे ..... महंत डॉ. राजेन्द्र प्रसाद 14
- गुरु भक्ति का अनुपालन ..... श्रीमती पूनम शर्मा 16
- नाम की श्रेष्ठता 22

स्वास्थ्य जगत

- हार्ट अटैक से बचाव ..... डॉ. पारसनाथ सिंह 23
- तपेदिक अथवा टी.बी. ..... डॉ. सुनैन बाला 31

स्तंभ

- अनुराग सागर ..... महंत हरिसिंह राठौर 11
- सदधर्म कबीर पंथी नियमावली ..... महंत श्री हरिसिंह राठौर 23
- पंथ प्रकाश ..... श्री प्रशांत शर्मा 38
- ज्ञानवर्धक पहेली ..... श्री प्रशांत शर्मा 34

	वार्षिक	त्रैवार्षिक
भारत, नेपाल में	60 रुपये	165 रुपये
विदेश में	10$	25$

स्वास्थ्य जगत

हार्ट अटैक से बचाव

डॉ. पारसनाथ सिंह,
दामाखेड़ा (रायपुर)

आधुनिक तनाव पूर्ण, अनियमित जीवन शैली, असंयमित गलत खान पान, शारीरिक श्रम के अभाव के कारण आज सबसे अधिक खतरा हृदय को होता है। प्राचीन काल में 10 से 20 प्रतिशत लोग ही हृदय रोग से ग्रस्त होते थे, जबकि आज इसके विपरीत कुछ प्रतिशत लोग ही इस बीमारी से बच सकते हैं। वर्तमान समय में दिल की बीमारी किसी को भी हो सकती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार 2015 तक भारत दुनिया में सबसे अधिक दिल के रोगियों का देश बन जायेगा। खास बात यह है कि दिल के मरीजों में 30 वर्ष की आयु वाले रोगियों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। हृदय रोग, हार्ट अटैक (हृदय घात) के कारण प्रत्येक वर्ष पौने दो करोड़ लोगों की जान चली जाती है। एड्स, टी.बी. मलेरिया, डायविटीज, कैन्सर, श्वास रोग से मरने वाले मरीजों से कहीं ज्यादा मौते, दिल की बीमारी से होती है। पहले किसी युवा वर्ग को हार्ट अटैक होना एक अूजबा माना जाता था। परन्तु वर्तमान समय में दिल के कुल रोगियों में 33 प्रतिशत 45 वर्ष से कम आयु के पाये जाते हैं। पिछले कुछ वर्षों से विकसित देशों (अमेरिका, इंग्लैण्ड, फ्रान्स) में हार्ट अटैक के प्रति जागरुकता काफी बढ़ी है। वहाँ लोग अब खान-पान और व्यायाम को विशेष महत्व देने लेगे हैं। भारत में युवा वर्ग में हार्ट अटैक को लेकर सावधानी जागरुकता बढ़ना शुरु हो गया है। हार्ट की बिमारी के लक्षण घातक दौरा पड़ने के पहले से ही दिखाई देने लगते हैं । लेकिन लोग इसे नजर अन्दाज कर देते हैं। विशेषज्ञों की कहना है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने हृदय को स्वस्थ रखने का प्रयास करना चाहिये। ताकि हृदय रोग से जीवन की रक्षा की जा सके। दिल की बीमारी से बचने के लिये आपको अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरुक होना जरुरी है।

हृदय रोग—हृदय रोग ज्यादातर 2 प्रकार के पाये जाते हैं—

1. रियूकेटिक या जन्मजात रोग,

2. कारोनरी इसचीकिक हार्टज-हृदय की मांस पेशियों एवं कारोनरी धमनी में रक्त प्रवाह की कमी से यह रोग होता है। हृदय की कारोनरी धमनी में रूकावट ब्लाकेज होना इसका मुख्य कारण होता है । कारोनरी हार्ट रोग 2 प्रकार का होता है।

1. एनजाइना पेक्टोरिस (हृदय शूल)—इससे छाती के मध्य में दर्द होता है, जो कभी-कभी बाये हाथ, गर्दन और बाये कंधे तक चला जाता है। डायबिटीज के रोगियों में दर्द बहुत कम पाजा जाता है। आजकल एनजाइना से पीड़ित मरीजों के छाती में भारीपन, छाती में जलन, चुभन या दम घुटने, सांस फूलने की शिकायत ज्यादातर पाई जाती है। छाती में दर्द या भारीपन तेज चाल से चलने पर, सीढ़िया चढ़ने पर, खाने के बाद चलने पर हाथ में वजनी झोला लेकर चलने पर बढ़ जाता है। यह तकलीफ आराम करने पर कुछ मिनटों में ही ठीक हो जाती है। एनजाइना रोगी को एक गोली जी.टी.एन. (गिल सरिल ट्राई-नाइट्रेट, एजीसिड) या सारबीट्रेड देने पर तकलीफ ठीक हो जाती है। यह रोग वर्षों तक, मेजर हार्ट अटैक (हृदया घात) होने तक चला जाता है। एनजाइन में पल्स, बी.पी., ई.सी.जी. ज्यादातर 90 प्रतिशत नार्मल पाया जाता है। अनस्टेविल एनजाइना इससे आराम करने पर या नींद की दशा में भी तकलीफ होने लगती है।

2. मेजर हार्ट अटैक या हृदयाघात (मायोकार्डियल इनफार्कसन)—यह एक प्रकार की इमरजेन्सी है। इसमें छाती के बीचोंबीच अचानक तेज दर्द होता है, जो बाये हाथ, गर्दन, कन्धे या पेट के ऊपरी भाग तक जा

सकता है। 10 प्रतिशत डायविटीज रोगियों में दर्द नहीं होता है। छाती में दर्द, तकलीफ, सांस फूलना कुछ मिनटों की जगह घंटों तक हो सकता है। पूरे शरीर में काफी पसीना निकलना इस रोग का मुख्य लक्षण है। ऐसे मरीज को तुरन्त आई.सी.यू. वाले अस्पताल में भेज देना चाहिए। भेजने के समय यदि 1 गोली जी.टी.एन. या सारबीट्रेट जीभ के नीचे चूसने के लिये एस्पीरिन को खिलाने से मरीज को बहुत आराम मिलता है। मरीज की जान बचाई जा सकती है।

3. हृदय रोग की जाँच—हृदय रोग का पता लगाने के लिये प्रमुख जाँच निम्नवत की जाती है—

(अ) एक्सरे—हृदय की सामान्य आकृति, हृदयावरण शोथ (वाह्य झिल्ली में पानी भर जाना) के कारण आकार बड़ा हो जाता है। हृदय की मांसपेशियों में कैल्सियम जमा हो जाता है, इसका पता एक्सरे के माध्यम से किया जाता है।

(ब) ई.सी.जी. (इलेक्ट्रो कार्डियोग्राफ)—हृदय की गति धड़कन लय आदि की जानकारी ई.सी.जी. से प्राप्त हो जाती है। हृदय से उत्पन्न होने वाली विद्युत तरंगों के प्रवाह में कोई रुकावट हो या मंसपेसियों में छति हुई हो तो उसकी जानकारी इस परीक्षण से मिल जाती है। यह परीक्षण कष्टप्रद या घातक नहीं है। ई.सी.जी. में यदि कोई विकार हृदय में होता है, तो जांच करने पर एस.टी.वेव एलीवेट हो जाती है तथा टी.वेव का इनवर्सन हो जाता है।

(स) टी.एम.टी. (ट्रेड मिल टेस्ट)—इस टेस्ट में रोगी को एक पट्टे पर खड़ा करके चलाया जाता है और साथ में ई.सी.जी. भी किया जाता है। धीरे-धीरे पट्टे की रफ्तार और ऊँचाई बढ़ा दी जाती है और रोगी को चलने की गति बढ़ाना तथा चढ़ाई पर चढ़ते समय बल भी अधिक लगाना पड़ता है। धीरे-धीरे रोगी को थकान होती है, धड़कन बढ़ जाती है और ब्लड प्रेशर बढ़ जाता है। बीच में ब्लड प्रेशर की भी जाँच की जाती है। यदि रोगी की कारोबरी धमनी में रूकावट होती है तो बढ़ी हुई मांग के अनुसार रक्त की पूर्ति न होने की दशा में इस्चीमिया की स्थिति बन जाती है, जिसकी जानकारी ई.सी.जी. मशीन से मिलती है। इससे भविष्य में हृदयाघात और धमनियों में रुकावट की जानकारी मिलती है। यह टेस्ट रोगी की दशा के अनुसार किया जाता है। यदि रुकावट अधिक हो और बिना किसी और टेस्ट सीधे यह टेस्ट के किया जाय तो घातक भी हो सकता है। चिकित्सक की देख-रेख में यह टेस्ट किया जाना चाहिए।

(द) कारोनरी एंजियोग्राफी—कारोनरी धमनियों में कहाँ कितना ब्लाकेज है, इसका पता लगाने के लिये जांघ की मुख्य धमनी में एक छोटा सा छेद करके एक कैथेटर डालकर हृदय तक पहुँचा दिया जाता है, फिर कैथेटर में एक द्रव (ओपेक डाई) डालकर एक्स-रे द्वारा सभी धमनियों के चित्र लिए जाते हैं। द्रव के द्वारा धमनियों में जहाँ-जहाँ रुकावट है, उसका स्पष्ट पता चल जाता है। इसकी सी.डी. भी बना ली जाती है, जिससे ब्लाकेज की पूरी जानकारी मिल जाती है। यह परीक्षण रेडियल आर्टरी से हाथ में कट लगाकर भी किया जाने लगा है। यह डाई रक्त सरकुलेशन द्वारा किडनी से छन कर निकल जाती है। थोड़े समय के लिये यह डाई किडनियों पर बुरा प्रभाव भी डाल सकती है। ब्लाकेज का पता लगाकर छोटे ब्लाकेज को स्टन्ट लगाकर चिकित्सा भी दी जाती तथा एनजियोप्लास्टी कर दी जाती है।

(इ) इको-कार्डियोग्राफी—शरीर में ध्वनि तरंगे हृदय और धमनियों से टकराकर प्रतिध्वनि को विशेष प्रणाली से चित्रित किया जाता है। वेन्ट्रिकल की दीवार की मोटाई, आर्टिकल्स फैलना सिकुड़ना क्रम से है या नहीं तथा वाल्व ठीक से खुल और बन्द हो रहे हैं या नहीं, हृदयाकरण तथा फुफ्फुप्सा वरण में पानी तो नहीं भर गया है आदि का इस टेस्ट द्वारा पता लगाया जाता है। साथ ही हृदय की पंपिंग क्षमता ज्ञात हो जाती है।

(ई) पेट स्कैन—हृदय में मांसपेशियों की क्षमता कितनी है हृदयाघात द्वारा मांसपेशियों में कितनी छति

हुई है तथा क्षति के बाद मांसपेशियाँ जीवित है या नहीं और पुनर्जीवित हो सकती है या नहीं इन बातों का पता पेट स्कैन द्वारा लगाया जाता है। क्या क्षति से रोगी को पुन: उबारा जा सकता है। यह ज्ञात किया जाात है।

(उ) स्ट्रेस थैलियम—डाई डालकर स्कैन करके विभिन्न चित्रों को अंकित किया जाता है। हृदय के कितने भाग में ब्लाकेज से रक्त की आपूर्ति बाधित हो रही है, कितना हिस्सा जीवित या मृत है, इसकी जानकारी सामान्य अवस्था में तथा हृदय को आरटीफीसियल स्टेस देकर पुन: स्कैन किया जाता है। कितने स्ट्रेस के बाद इस चीपिया की स्थिति उत्पन्न हो रही है पर विभिन्न चित्रों द्वारा ज्ञात किया जाता है। पेट स्कैन और स्ट्रेसथीलियम परीक्षण हृदयाघात के कम से कम 10 दिन बाद करवाना चाहिए, जब रोगी स्वयं की सामान्य गतिविधियाँ कर लेता है और 5 से 10 मिनट तक घूम सकता हो।

बाईपास, एनजियोप्लस्टी के बाद हार्ट में ब्लाकेज की संभावना बनी रहती है, इसे देखते हुए जाँच और इलाज के लिये नई तकनीकें कारोनरी सी.टी. स्कैन और फा-फारटेस्ट उपयोग में लाई जा रही है। इससे व्यक्ति को हार्ट अटैक की सम्भावना ट्रीटमेंट का स्तर ज्ञात किया जा सकता है। हार्ट में ब्लाकेज की जाँच की नई तकनीक इन्ट्रा वायसोलर अल्ट्रासाउण्ड उपयोगी साबित हो रहा है। हृदय सम्बन्धी बीमारियों के बेहतर और आसान इलाज के लिये आधुनिक तरीके हैवी और बायोडाइजेस्बल स्टैण्ड प्रणाली नई दिल्ली स्थिति मेदान्ता हार्ट इन्सटीटयूट में कार्डयोलाजिस्ट डॉ. प्रवीण चन्द्रा द्वारा अपनाई जा रही है। इसके द्वारा अधिक उम्र के मरीजों का आसानी से इलाज किया जा सकता है। खास बात यह है कि बायो डाइजेस्वल प्रणाली से बाई पास सर्जरी में स्टैण्ड की समस्या भी खत्म हो जाती है। स्टैण्ड को केप्सूल की तरह आसानी से बाहर निकाला जा सकता है। यह तकनीक इसके पहले केवल विदेशों में उपलब्ध थी मेदान्ता हास्पीटल की रिसर्च इकाई द्वारा निकट भविष्य में ऐसी दवाई बनाने की कोशिश की जा रही है, जिससे हार्ट अटैक का खतरा हमेशा के लिये खत्म हो जायेगा।

हार्ट अटैक से बचाव—भारत में तेजी से बढ़ते हुए हृदय रोग का प्रमुख कारण अनियमित जीवनशैली, गलत खान-पान शारीरिक व्यायाम का अभाव, तम्बाकू एवं शराब का सेवन करना है। हार्ट अटैक से बचने के लिये हृदय की सेहत के लिये हानिकारक निम्नलिखित कारणों पर ध्यान देना बहुत आवश्यक है—

(1) असंयमित आहार—गलत खान-पान हृदय रोग का मुख्य कारण है फास्टफूड, जंक फूड, डिब्बा बंद खाद्य पदार्थ, मैदा से बन पदार्थ अधिक घी, तेल से बने पदार्थ जैसे पकौड़ी, भजिया, तले भुने, मिर्च मसालेदार भोजन नहीं खाना चाहिये। अधिक वसा चिकनाई युक्त भोज हमारे शरीर में वसा (फैट) के स्तर को बढ़ा देता है जो हृदय की रक्त वाहिनियों में रुकावट पैदा कर देती है, धमनियाँ कठोर संकरी हो जाती है। हार्ट को सही रखने के लिये खराब कोलेस्ट्राल (एल.डी.एल. यानी लो डेफीनीशन लाइपोप्रोटीन) का स्तर कम और अच्छे कोलेस्ट्राल (एच.डी.एल. अर्थात् हाई डेलीनीशन लाइपो प्रोटीन) का स्तर अधिक होना चाहिए। जॉन हाप्किन्स सिकेराना सेन्टर फार दि प्रिवेन्सन ऑफ हार्ट डिसीज के निदेशक रोजर ब्लू मेथल का कहना है कि हमारे शरीर में एल.डी. एल. 130 मिग्रा प्रत्येक डेसी लीटर और एच.डी.एल. 40 मिग्रा होना चाहिए।

कोलेस्ट्राल कम करने के लिये क्या करें—1. डॉक्टर की सलाह से स्टोइवास, लिपीक्टोर 10 मिग्रा. की गोली रोजाना खाना चाहिए।

2. सफोला या सनफ्लावर आयल, पोस्टमैन तेल का प्रयोग करना चाहिए।

3. दही में अखरोट की गिरी डालकर सेवन करना चाहिए। इससे 9 प्रतिशत एच.डी.एल. बढ़ सकता है। सुबह काफी की जगह चाय पीना चाहिये, इससे एल.डी.एल. 11 प्रतिशत तक नियंत्रित किया जा सकता है।

(2) उच्च रक्तचाप चाय (हाई बी.पी.)—दीर्घकालीन हाई बी.पी. से हार्टअटैक का खतरा बढ़ जाता

है। ऐसे रोगियों में हार्ट की बीमारी के अलावा, किडनी फेल्पोर, स्ट्रोक पक्षाघात होने की आशंका भी बढ़ जाती है। हार्टफोर्ड हास्पिटल के कार्डियोलाजिस्ट पाल थामसन का कहना है कि हाई बी.पी. से हार्टअटैक का खतरा बढ़ जाता है, अत: रक्तचाप को नियंत्रित रखना बहुत जरुरी है। 120-80 रक्तचाप सही माना जाता है।

हाई बी.पी. में क्या करें—एक शोध के अनुसार हाई बी.पी. से पीड़ित व्यक्ति यदि रात को सोने से पहले परमात्मा का ध्यान करे तो बी.पी. 3.5 प्रतिशत कम हो जाता है। ऐसे रोगियों को भोजन में नमक (6 ग्राम) से अधिक नहीं लेना चाहिए तथा तले भुने पदार्थों का सेवन बंद कर देना चाहिए।

(3) हार्टरेट, हृदय की धड़कन—न्यू इंग्लैंड जर्नल ऑफ मेडीसन के एक अध्ययन के अनुसार जिन लोंगों की हृदय की धड़कन 75 वीट प्रति मिनट होती है, उन्हें हृदय रोग का खतरा 3 गुना ज्यादा बढ़ जाता है। 65 वीट प्रति मिनट आदर्श धड़कन की गति मानी जाती है।

(4) दीर्घकालीन डायबिटीज (मधुमेह)—रक्त में ग्लूकोज की मात्रा बढ़ने से हृदय रोग का खतरा बढ़ जाता है। जॉन हाप्किन्स हास्पिटल के प्रोफेसर जानेथन सौकेट का कहना है कि सुबह खाली पेट फास्टिंग ब्लडशुगर 100 मिग्रा. से ज्यादा और खाने के दो घंटे बाद 140 मिग्रा. से ज्यादा होने पर मधुमेह के रोगियों में हार्ट की बीमारी गुर्दे और आँखों को क्षति पहुँचने का खतरा बढ़ जाता है। जर्नल आफ अमेरिकन मेडीकल एसोशियेसन के अनुसार 140 मिग्रा. से अधिक ग्लूकोज खरतनाक है। फास्टिंग ब्लड ग्लूकोज का स्तर कम करने के लिये यह जरुरी है कि शर्करा का स्तर न बढ़ने दिया जाय और वजन को कम किया जाये।

(5) मोटापा—मोटापा कई रोगों की जड़ है। मोटे व्यक्ति की धमनिया कठोर और संकरी हो जाती है तथा अन्दर रोग का खतरा बढ़ जाता है।

(6) ज्यादा धूम्रपान—धूम्रपान या तम्बाकू का किसी प्रकार का सेवन हृदय रोग का दुश्मन है। इसे तुरन्त बन्द कर देना चाहिए। तम्बाकू में पाया जाने वाला निकोटीन घातक है।

(7) अत्यधिक शराब का सेवन—शराब के सेवन से हृदय रोग का खतरा बढ़ जाता है। अत: मद्यपान तुरन्त बंद कर देना चाहिए। मद्यपान से शरीर में ट्राई ग्लिसीराइड बढ़ जाता है। रक्त में ट्राईनिलसीराइड 100 या 130 मिग्रा. से ज्यादा होना, हृदय रोग के लिये खतरा बन जाता है।

(8) मानसिक तनाव—मानसिक तनाव, चिन्ता से रक्त में स्ट्रेस हारमोन का स्तर बढ़ जाता है। इससे हृदय की रक्त वाहनियों पर बुरा असर पड़ता है। अत: मानसिक तनाव से दूर रहना चाहिये।

(9) शारीरिक व्यायाम का अभाव—वर्तमान समय में लोग आराम तलब जिन्दगी जीना चाहते हैं। लोगों का अधिकतर समय बैठे-बैठे ही गुजर जाता है। इसके परिणामस्वरूप शरीर के अतिरिक्त फैट का जमाव होना शुरु हो जाता है, जो हृदय रोग के लिये निमंत्रण देता है। समय के अभाव के कारण आज अधिकतर काम मशीनों के द्वारा किया जाता है। लोगों के पास शारीरिक व्यायाम करने का समय नहीं है। इससे आज हृदय रोग का खतरा बढ़ गया है।

(10) आनुवांशिकता—यदि परिवार में माता-पिता भाई बहन को हृदय रोग हो चुका है, तो ऐसे व्यक्ति के हृदय रोग का खतरा बढ़ जाता है। हृदय रोग ज्यादातर 35 साल की आयु के बाद होता है। हृदय रोग से बचने के लिये अत्यधिक घी, तेल के सेवन से बचना चाहिए। इसके अलावा वजन को नियंत्रित करने के लिये प्रतिदिन 1 घंटा नियमित व्यायाम करना चाहिए । प्रात: लोग इन बातों को नजर अंदाज कर देते हैं, जो बाद में हानिकारक साबित होता है। हार्टअटैक (दिल का दौरा) होने पर सीने और गले के बीच तेज दर्द या घुटन होती है, शरीर पसीने से भर जाता है। इसमें शुरु के 1 घंटे को मेडिकल भाषा में गोल्डन आवर कहा जाता है। इस दौरान 4 घंटे के भीतर मरीज को तुरन्त आई.सी.यू. भेज देना चाहिए, भेजते समय यदि रोगी को एक एस्प्रीन की गोली और जीभ के नीचे

सारबीट्रेट की गोली चूसने के लिये दिया जाये तो मरीज के लिये यह लाभदायक कदम होगा।

हार्ट अटैक से बचाव के लिये सर्तकता—हार्ट अटैक के बचाव के लिए निम्नलिखित सावधानी रखना चाहिए अर्थात् जीवन शैली में सुधार लाकर हृदय को आजीवन निरोग रखा जा सकता है—

आहार विहार—सादा भोज करना चाहिए यह स्वाद के हिसाब से उबाऊ हो सकता है, लेकिन सबसे सेहतमंद कदम है,जिसे आप उठा सकते हैं। स्वाद के लिये घी तेल युक्त भोजन जिसे देखकर मुंह में पानी भर जाये, नहीं खाना हितकारी है। जीभ के स्वाद के संबंध में सदगुरु कबीर साहेब ने बहुत पहले चेतावनी देते हुए कहा है कि जीभ पर नियंत्रण रखना बहुत आवश्यक है। जीभ जो हर प्रकार का स्वाद लेने के लिये लालायित रहती है उसे खुला छोड़ देना हानिकारक है। साहेब न कहा है—

खट्टा मीठा चटपटा जिह्वा सब रस लेत।
चोर बैठा घर मांहि, पहरा किसका देत।।

यह ऐसा भीतरी चोर है, जिस पर नियंत्रण रखना स्वाद के प्रति बहुत सावधानी रखना आवश्यक है। स्वाद के लिये अनाप-शनाप खाना हानिकारक होता है।

व्यायाम—एरोविकस व्यायाम पसीना निकालने में सहायक होता है। प्रात: एक घंटे पैदल टहलना शरीर के लिये लाभदायक है, इससे कोलेटरल सरकुलेशन को मेनटेन किया जा सकता है। अनुलोम विलोम नाड़ी शोधन प्राणायाम का नियमित अभ्यास शरीर के साथ मन को शान्ति प्रदान कराना है। व्यायाम के लिये रूटीन बनाये तथा इसका कड़ाई से पालन करे। अध्यात्म में रुचि ले अच्छे साहित्य का अध्ययन, चिन्तन मनन करें इससे तनाव दूर होता है मन को शांति मिलती है।

सर्तकता—शरीर को स्वस्थ रखने तथा हृदय को स्वस्थ रखने एवं अन्य रोगों से बचने के लिये, निम्नलिखित चीजों के प्रति सतर्कता रखना जरूरी है। इनका प्रयोग सतर्कता से करना चाहिये। प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में सेवन एस (सात एस) के प्रति सावधानी रखना सर्तकता रखना, स्वस्थ रहने के लिये सबसे सर्वोत्तम कदम है 7 एस का फार्मूला याद रखना बहुत आसान है।

प्रथम एस (स्वीट)—ज्यादा स्वीट या मिठाइयाँ (शुगर) लेने से डायविटीज की बीमारी हो सकती है। जो दिल के लिये खतरनाक साबित हो सकती है।

दूसरा एस (साल्ट)—ज्यादा नमक साल्ट जंक फूड डिब्बा बंद खाद्य पदार्थ लेने से हाई ब्लड प्रेशर का कारण बन सकता है। अत: यथा सम्भव इनका कम मात्रा मे उपयोग करना दिल के लिये बेहतर है।

तीसरा एस—(सेटूरेटेड फैट या संतृप्त वसा) चीज मक्खन, घी, तेल से तली चीजें शरीर में कोलेस्ट्राल को बढ़ाती है।

चौथा एस (ए स्मोकिंग या धूम्रपान)—किसी भी तरीके से की गई तम्बाकू सेवन स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है।

पाँचवा एस (स्पाइस या मसाले)—ज्यादा मिर्च मसाला कई रोगों की जड़ है।

छठवाँ एस (स्काच या शराब)—शराब पीना स्वास्थ्य का दुश्मन है।

सातवाँ एस (स्ट्रेस या मानसिक तनाव)—अत्यधिक मानसिक तनाव, चिन्ता के कारण शरीर में अनेक व्याधियाँ रोग पैदा हो जाते हैं। चिन्ता शरीर को निर्बल और खोखला बना देती है।

अत: अपनी अनियमित दिनचर्या (लाइफस्टाइल) में सुधार लाकर खान-पान में सावधानी लाकर तथा दिनचर्या में रोजाना नियमित व्यायाम, योगासन, ध्यान, प्राणायाम को महत्वपूर्ण स्थान देकर नसा आदि से दूर रहकर हम अपने हृदय को आजीवन स्वस्थ बना सकते हैं।

गुरु की कृपा

भोजराय दास, भिलाई (छ.ग.)

यह संसार गुरु कृपा के आधीन है। दुनिया में हर कार्य के पीछे गुरु का ही देन होता है। चाहे वह धार्मिक कर्मकाण्ड है। राजनीतिक, आर्थिक या सामाजिक हो। गुरु कृपा से आध्यात्मिक पुष्प की प्राप्ति तो होती है साथ ही संसार के समस्त सुख सुविधाओं की प्राप्ति हो गुरु कृपा से ही प्राप्त होता है। गुरु की कृपा के बिना काया माया में मिल जाती है। शेख फरीद जैसे वेदान्ती, गुरु के विमुख होते ही इतने विषयों में फँसे कि विवाह करके संसारी हो गये। विषयवासना के सामने उनकी तपस्या किसी काम न आई। शेख फरीद अगर गुरु भक्त बने रहते तो भवसागर के पार हो जाते। जो सच्चे गुरु को पहिचान कर उसकी शिक्षा के अनुसार चलेगा, वह सत्यलोक को पा सकता है। स्वसंवेद का यही सार है कि गुरु के चरणों को दृढ़ता से गहे रहे। क्योंकि बिना उसकी पूजा के कुछ प्राप्त नहीं होगा। सदा गुरु की सीख माननी चाहिये उनकी कृपा में सर्वस्व है।

जो सदगुरु से प्रेम और श्रद्धा करेगा। उसे ही सत्य शब्द (सार शब्द) की प्राप्ति होती है, गुरु पर श्रद्धा नहीं करता वह शून्य रहेगा। गुरु से प्रेम, श्रद्धा ही धर्म की जड़ है। सदगुरु का मत निर्गुण तथा सर्गुण से अलग है। जैसा गुरु कहे वैसा ही करे। अपनी बुद्धि न लगावे नाम तो समस्त संसार कर रहा है पर जो नाम सदगुरु द्वारा मिलता है वही सच्चा है। सहस्त्रों ब्रह्म तथा ऋषि, मुनि, पीर, पैगम्बर आदि हो गये, वे सब विषय की अग्नि में जल रहे हैं अभिमान में डूब हुये हैं । इसी कारण उनको सदगुरु के दर्शन नहीं होते, जिसमें सदगुरु के प्रति प्रेम तथा विश्वास है वही मुक्ति का अधिकारी होता है। मनुष्यों में वही भाग्यवान है, जो सद्गुरु की सेवा करता है। दर्शन को जाने से और वचन सुनने से अन्त:करण पवित्र होता है। गुरु मुख उसी का नाम होता है जो सद्गुरु को मालिक समझता है इसी विषय पर एक दृष्टांत है। दक्षिण भारत में एक परम श्रेष्ठ महात्मा अपने शिष्यों सहित रहते थे। एक दिन सत्संग हो रहा था उसी समय एक मुसलमान मौलवी आया, वह मक्का जाने के लिये निकला था, उसने मक्के यात्रा की बहुत प्रशंसा कि कहाँ मक्का अत्यंत श्रेष्ठ स्थान है वहाँ आपके शिष्यों को भी जाना उचित है। उस समय महात्मा शिष्य अत्यंत रुष्ट हुये एक शिष्य ने मौलवी को कहा करोड़ों मक्का महात्मा के चरणों मे है। महात्मा जी नित्य क्रिया करने गये उस समय मौलवी का महात्मा के शिष्यों से बहु वाद विवाद हुआ। जब महात्मा आये तब मौलवी ने शिकायत की। महात्मा जी ने अपने शिष्य को समझाया कि मक्का के विषय में मौलवी का कहन बहुत ठीक है वह पवित्र स्थान दर्शन योग्य है तू भी मौलवी के साथ मक्का के दर्शन को चला जा। वह शिष्य गुरु मुख था। हाथ बाँधकर खड़ा हो गया। मक्का जाने के लिये मौलवी के साथ पानी जहाज पर सवार हो गया। थोड़ी दूर चला था कि एक समुद्री तूफान आया जहाज टूट गया जहाज पर सवार बाकी सब डूब गये सिवाय महात्मा के शिष्य के वह शिष्य जहाज के एक टूटे तख्ते पर बैठा डूबने के समीप था उसी समय समुद्र से एक हाथ निकला साथ ही शब्द हुआ कि यदि तू अपना हाथ मुझे पकड़ा दे तो मैं तुझे बचा लूँगा । उस शिष्य ने पूछा आप कौन हो ? उत्तर आया मैं पैगम्बर साहब हूँ। उस शिष्य ने जवाब दिया मैं नहीं जानता कि बैगम्बर साहब कौन है ? मैं केवल अपने गुरु महाराज को जानता हूँ। शिष्य के इतना कहते ही तब वह हाथ छिप गया, शिष्य तखत पर बैठा डुबकी खाता रहा । कुछ पल पश्चात एक दूसरा हाथ निकला और कहा कि मुझको अपना हाथ पकड़ा दे मैं तुझे बचा लूंगा। उस शिष्य ने पूछा आप कौन उतर आया मैं स्वयं परमेश्वर हूँ। शिष्य ने कहा मैं अपने गुरु के अलावा किसी दूसरे को नहीं जानता। मेरा परमेश्वर मेरा गुरु है। शिष्य के इतना कहते ही वह हाथ छिप गया। कुछ पल के पश्चात तीसरा

हाथ निकला, उसने पुकार कर कहा, तू अपना हाथ मुझको पकड़ा दे, मैं तेरा दादा गुरु हूँ शिष्य ने फिर उतर दिया मैं अपना हाथ अपने गुरु को ही पकड़ाऊँगा, दूसरे को हाथ कदापि न दूंगा चाहे जीवित रहूं या मर जाऊँ। तब वह हाथ भी विलुप्त हो गया। इसके पश्चात् स्वयं सद्गुरु आये और अपने शिष्य को हृदय से लगा लिया। उसे तुरन्त ही अपने स्थान पर ले गये । गुरु मुख शिष्य की पूरी परीक्षा हो चुकी । सर्व शब्द उसी गुरु महाराज के थे। जो शिष्य की पूर्ण परीक्षा के लिये प्रगट किये थे। इस कथन का परिणाम यह है कि चाहे कोई किसी भी प्रकार के तीर्थ, व्रत, दान पुण्य, यात्रा, कर्म, उपासना, ज्ञान की पूर्णता प्राप्ति करे। कठिन से कठिन तपस्या करे। हमें परमधाम की प्राप्ति केवल सच्चे सद्गुरु के चरण शरण में ही होगी बांकी सारा भवसागर में डूब जायेगा।

धर्मनि वहि देश हमारो बासा।

अमर पुरुष जहाँ आप बिराजे, हंसा करत बिलासा ।

विष्णु विरंचि और शिव सनकादि, थके जोति के पासा।

चौदह खण्ड बसै यम चौदह, यह सब काल तमाशा।।

सात सुरति के आगे समरथ, श्वेत भूमि परकाशा।

संशय लोक नहीं है बाकी खुले, केवड़ा बारह मासा।।

वहाँ के गये बहुर नहीं आवे, आवागमन को नाशा।

सदा आनंद होत है वा घर, कबहू न होत उदासा।।

चन्द्र न सूर दिवस नहीं रजनी, नहि धरणी अकासा।।

अमृत भोजन हंसा पावे, रहत पुरुष के पासा ।।

कहै कबीर सुनो धरमदासा, छोड़ो खलक की आशा ।। **(ग्रन्थ कबीर मंसूर)**

सद्गुरु कबीर साहब कहते हैं कि जो जीव हंस स्वरूप में पाँच तत्व पच्चीस प्रकृति तीन गुण से अलग हो वही सत्यपुरुष के दरबार पहुंचता है। जितने जीव सद्गुरु के शरण में आते हैं। उन सब पर साहब की दया होती है। पंथ श्री गृन्धमुनि नाम साहब कहते थे कि जब जंगल में आग लगती है तो आग जंगल के कच्चे सूखे सभी लकड़ी को जलाकर राख कर देती है। वह आग सूखे और कच्चे का भेद नहीं करती है इसी प्रकार सद्गुरु होते हैं। उनके शरण में जो भी जीव आता है सभी के ऊपर सद्गुरु की दया होती है। उनको रहने को उत्तम स्थान दिया जाता है। जहां वे सुखपूर्वक निर्भयता से रहते हैं । परन्तु पुरुष का दर्शन नहीं पाते। सद्गुरु के दर्शन के अधिकारी वही हंस होते हैं जो पाँच तत्व तीन गुण से अलग होते हैं, वही त्रिगुणातीत हंस सत्यपुरुष के दर्शन के अधिकारी होते हैं। सद्गुरु ने कहा है कि सत्यलोक में अट्ठासी सहस्त्र द्वीप है, उन सभी द्वीपों में हंसों का स्थान होता है, जहां वे आनंदपूर्वक रहते हैं। जो कोई उनमें कर्म करता है। वह सद्गुरु की दया से पांच तत्व तीन गुण से छूट जाता है। बिना सद्गुरु के पांच तत्व तीन गुण से छूटना अत्यंत असंभव है। युगों-युगों में सद्गुरु के हंस अपने कर्त्तव्यों से सत्यपुरुष के लोक के मार्ग का उपदेश देकर जीवों को सत्यलोक के पथ पर करते हैं। पीछे अपने कथन को चरितार्थ करते हुए अपनी व्यवहार से कार्य सिद्ध करके दिखाते हैं। सत्यपुरुष के वंश ऐसे होते हैं इस कराल युग में भी काल जाल का सत्यपुरुष के हंसों पर कोई असर नहीं होता।

कबीर साहब का कथन है कि हे धर्मदास । जिसमें गुरु भक्ति, दीनता, साधु सेवा, गुरु सेवा का भाव हो उनको उपदेश दो और जिसमें ये गुण न हो उनको भूलकर भी अपने हंसों में स्थान न दो। सद्गुरु कबीर साहब के समय रविदास जी, गरीबदास जी, गुरु नानक जी, संत पीपा साहब, संत मीराबाई आदि संतों ने कबीर साहब पहचाना और आत्मसात किया।

भारत वर्ष में बहुत लोग है जो अपने को कबीर पंथी कहते हैं। परन्तु उन लोगों को विचार करना है। जब तक लोग धनी धर्मदास जी साहब के वचन वंश चुरामणी नाम साहब के वंशगुरुओं के सम्पर्क में नहीं आयेगा तब तक सद्गुरु कबीर साहब एवं उनके मार्ग को समझना कठिन ही नहीं न वरना असंभव है। जितने लोग कबीर साहब की आज्ञा पर चलते हैं। उनकी धर्म ग्रन्थ स्वसंवेद है। यह स्वसंवेद ही यथेष्ट है। अन्यान्य सभी नकल है जितने शास्त्र तथा विद्या है वह सभी स्वसंवेद से है। स्वसंवेद एक नदी है। जिससे एक बूंद निकल कर सर्व संसार में फैल रहा है। उसी में चिड़िया एक चोंच भरकर प्यास बुझा लेती है। इसी प्रकार सारे संसार से परमेश्वर और संसार के आचार्य इस स्वसंवेद का कोई भाग अथवा कोई टुकड़ा निकालकर अपना शास्त्र बनाकर बैठे हैं। स्वसंवेद से ही सभी ने श्रेष्ठता पाई है। परन्तु अपने पिता की प्रतिष्ठा तथा मर्यादा को किसी ने न जाना। इसकी सूक्ष्मता तथा स्वच्छता से कोई विज्ञ नहीं है। सहस्त्रों पंथ चल रहे हैं। वे सभी कबीर साहब के वाणी का सहारा लेकर अपने पंथ को प्रचारित कर रहे हैं। कितने तो ऐसे हैं जो कबीर साहब के ग्रन्थ तथा वाणी देखकर अपनी वाणी बनाते हैं। और अपने को कबीर साहब के बराबर अथवा बढ़कर ठहराते हैं। ऐसे कृतघ्न स्वार्थियों का कभी भलाई नहीं होने वाला है।

धर्मदास तू परम हित मोरा, तुम्हरो पला पकरै चोरा।
जिते जीव परवाना पावे, तब सो हंसा लोक सिधावे।
लोक जान में भेद है भाई, कोई न पूछे चित लगाई।
सहज अट्ठासी दीप सुधारा, जहां सब हंसा करै बिसारा ।
जैसे चाल चले संसारा, तैसे तैस द्वीप मंझारा।
निःतत्वी जाय पुरुष दरबारा, सकल द्वीप से द्वीप सो न्यारा।
पुरुष हजूर जो चाह रहाई, सो जिव आप दिये बिसराई।
एक क्षण माहि अमर घर जाई, छनहा हंसा देऊँ पहुँचाई।
जब सद्गुरु मंदिर पग देई, चरण धोई चरणामृत लेई।
सेवा करत सुरति चल आई, तबहि काल घर बजै बधाई।
धर्मदास मैं कहूँ पुकारा, बिरला जाय पुरुष दरबारा ।
शब्द को खोज करै नहीं, चिन्त देह शरीर ।
बिना शब्द पहुँचे नहीं, अस कथ कहै कबीर ।।

●●

पंथ प्रकाश

झांकियों में झलका कबीर दर्शन

सदगुरु कबीर धर्मदास साहब सेवा समिति अलवर (राजस्थान) की ओर से 27 मई 2012 रविवार को कबीर प्रकट दिवस मनाया गया। इस अवसर पर प्रात: 9 बजे से अलवर शहर में शोभायात्रा निकाली गई। शोभायात्रा में संत कबीर के प्रकट होने से लेकर उनका पूरा जीवन दर्शन दिखाया गया। देर रात तक भंडारे में लोगों ने प्रसादी पाई।

शोभायात्रा में आकर्षक झांकियाँ व 151 कलश लेकर राजस्थानी वेशभूषा में चल रही महिलाओं के साथ भजनों पर श्रद्धालु नाचते गाते चल रहे थे। शोभायात्रा कम्पनी बाग से लेकर अशोका टाकीज, माला खेड़ा गेट, त्रिपोलिया बाजार, सर्राफा बाजार व चर्च रोड होते हुए वापस कम्पनी बाग लौटी। नगरवासियों ने जगह-जगह फूलों से शोभायात्रा का स्वागत किया और शरबत पिलाया। शोभायात्र समापन के पश्चात रूपबास स्थित फौजी ढाभा पर भण्डारे का आयोजन रहा। जहाँ हजारों लोगों ने देर रात तक प्रसादी ग्रहण की।

यहाँ समाज के प्रतिभावान बच्चों सहित विशेष लोगों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महंत डॉ. राजेन्द्र प्रसाद थे। उन्होंने सदगुरु कबीर साहब के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए कबीरपंथ में नई चेतना का विकास किया । देश के विभिन्न राज्यों से पधारे संत-महंतों ने अपने भजन व प्रवचनों से श्रद्धालुओं को लाभान्वित किया। इस कार्यक्रम में अलवर के जेल अधीक्षक राकेश मोहन शर्मा, समिति अध्यक्ष अमरचन्द मीणा (फौजी), सचिव राधेश्याम जागिड़ व कोषाध्यक्ष गिरीराज प्रसाद सहित काफी संख्या में लोग मौजूद थे।

ज्ञानवर्धक पहेली

(वर्ष 18, अंक 2)

प्रश्न 1. बाँधवगढ़ के जुड़ावन साहब का नाम धर्मदास कैसे पड़ा ?

प्रश्न 2. सदगुरु कबीर साहब ने सर्वप्रथम कौन से शिष्य के यहाँ चौका-आरती सम्पन्न किया ?

प्रश्न 3. कबीर साहब के शिष्यों के नाम बताइए ?

प्रश्न 4. चलावा चौका में कौन से लग्न तत्व में नरियर मोरा जाता है ?

प्रश्न 5. भजन पूरा करो—

सोवत हती रे निभुल घर में, गुरु ने दई जगाय ।

.....

कहें कबीर धर्मदास सों वहाँ काल न खाय ।

ज्ञानवर्धक पहेली

(वर्ष 18, अंक 1)

प्रश्न 1. लहर तालाब में सदगुरु कबीर साहब के प्रगट होने वाली विलक्षण दृश्य का दर्शन सर्वप्रथम किसने किया ?

उत्तर—विक्रम संवत चौदह सौ पचपन, ज्येष्ठ सुदी पूर्णिमा, सोमवार के दिन ब्रह्म मुहुर्त में सत्यपुरुष का दिव्य तेज, प्रकाश पुंज के रूप में, काशी के लहर तालाब में उतरा। उस समय आकाश और पृथ्वी अलौकिक प्रकाश से प्रकाशित हो रहा था। लहर तालाब के तट पर स्वामी रामानंद जी के शिष्य अष्टानंद जी ध्यान में बैठे थे। हल्की हल्की वर्षा हो रही थी। बिजली चमक रही थी। जिस समय आकाश से एक प्रकाश पुँज उतरा उस समय तालाब के आसपास रोशनी जगमगाने लगी। फिर वह प्रकाश तालाब में ठहर गया।

थोड़ी देर में पूर्ण विकसित कमलपुष्प में प्रकाश पुंज की तेज रोशनी पड़ी, देखते ही देखते कमल पुष्प में नन्हा बालक अटखेलियां करते हुये स्वामी अष्टानंद जी को नजर आया। अदभूत दृश्य देखकर अष्टानंद जी बिना समय व्यतित किये अपने गुरु स्वामी रामानंद जी के पास चले गये और उन्होंने सारी घटना अपने गुरु जी को सुनाया। यह बात सुनकर स्वामी रामानंद जी ने स्वामी अष्टानंद जी से कहा कि वह प्रकाश जो तुमने देखा है, उसका फल शीघ्र ही देखने तथा सुनने में आयेगा। इस प्रकार स्वामी अष्टानंद जी लहर तालाब में सदगुरु कबीर साहब के प्रगट होने वाली विलक्षण दृश्य का प्रथम दर्शन किया।

गगन मंडल से उतरे सदगुरु सत्य कबीर ।
जलज मांहि पौढ़न किये सब पीरन के पीर ।।

(कबीर मंसूर पृ. 258)

सरवर तीर कुटी एकान्ता, निसै यहाँ एक वैष्णव संता।
देखि दृश्य शिष्य रामानंदा, पुलकित मन बहु अष्टानंदा।
करत रहे तब संध्या तरपण, देखत अचरज कियो विसर्जन।
गवने ढिग रामानंद स्वामी, कहत भयो प्रभु नमो नमामि।
दिव्य ज्योति देखि सरवर तर, बाल रूप कस पुरइन दल पर ।
अनहोनी घटना कर भाऊ, का प्रभु इच्छा वरणि सुनाऊ ।
अष्टानंद के वचन सुनि, धरत स्वामि भै ध्यान ।
जानि रहस बोले खुलै, कुछ दिन माहिं सुजान।

(सत्कबीर महापुराण पृ 250)

प्रश्न 2. सदगुरु कबीर साहब को इस संसार में गुरु बनाना क्यों पड़ा ?

उत्तर—पाँच बरस के जब भये, काशी मांझ कबीर ।
गरीब दास अजब कला, ज्ञान ध्यान गुणसीर।।

सद्गुरु कबीर साहब काशी में पाँच वर्ष के हुये तब छोटे-छोटे अपने हम उम्र बालकों के साथ खेलते

खेलते राम राम गोविन्द हरि कहा करते थे। तब मुसलमान लोग कहते थे, यह बालक काफिर है। कबीर साहब उनको उत्तर देते कि काफिर वह जो दूसरों का माल लूटता है, काफिर वह है जो कपट भेष बनाकर संसार को ठगता है, काफिर वह है जो निर्दोष जीवों की हत्या कर मांसाहार करता है, काफिर वह जो मदिरा पान करता है, काफिर वह जो दुराचार करता है, मैं किस प्रकार काफिर हूँ।

गलाकाट कर बिसमिल करे, तो काफिर बेबूझ।
औरन को काफिर कहै, अपनी कुफ्र न सूझ ।।

एक दिन सद्गुरु कबीर साहब ने गले में यज्ञोपवीत डाल अपने माथे पर तिलक लगाकर कांशी शहर के चौपाल पर लोगों को सदुपदेश करने लगे। तब ब्राह्मणों ने यह देखकर कहा कि यह तेरा धर्म नहीं है, तूने वैष्णव वेश कैसे बनाया ? यह तो हमारा धर्म है। तब सद्गुरु कबीर साहब ब्राह्मणों को उत्तर देते कि यदि हम सूत तानते हैं, जनेऊ तुम्हारा किस प्रकार हुआ। गोविन्द और राम तो हमारे हृदय में बसते हैं। तुम्हारे कैसे हुये। तुम गीता पढ़ते हो, परन्तु संसारिक धन के निमित्त सदैव धनाढ्यों के द्वार पर दौड़ते भटकते हो। हम तो परमात्मा के अतिरिक्त किसी अन्य को नहीं जानते। इतना सुन ब्राह्मण निरुतर हो जाते ।

मेरी जिह्वा विष्नु लैना, नारायण हृदय बसे गोविन्दा।
जम द्वारे जब पूछि परे, तब का करे मुकुंदा ।
हम घर सूत तानै नित ताना, कंठ जनेऊ तुम्हारे।
तुम नित बाँचत गीता गायत्री, गोविन्द हृदय हमारे ।
हम गोरु तुम ग्वाल गोसांई, जनम जनम रखवारे।
कबहि न वार सो पार चलाये, तुम कैसे खसम हमारे।
तुम ब्राह्मण हम काशी के जुलाहा, बूझो मेरा ज्ञाना।
तुम खोजत नित भूपति राजे, हरि संग मेरा ध्याना।

(कबीर मन्शूर पृ. 270-272)

हिन्दुओं, मुसलमानों दोनों समुदाय सदगुरु के साथ वाद-विवाद किया करते थे। सब परास्त हो जाते थे। जब लोगों ने देखा कि यह लड़का तो बड़ा ज्ञानी है, तब वे लोग पूछते कि कबीर आपका गुरु कौन है ? उस समय कबीर साहब के कोई गुरु नहीं थे। इस प्रश्न पर सदगुरु निरुत्तर और निस्तब्ध हो कुछ न बोलते। तब पाखंडी साधु लोग कहते हैं कि बिना गुरु के तुम्हारा ज्ञान प्रमाणित नहीं है। लोगों कि इस प्रकार कटाक्ष को जब सदगुरु ने सुना तो उन्होंने स्वामी रामानंद जी को जो उस समय प्रख्यात विद्वान थे, परन्तु जाति-पाँति छुआछूत आदि आडंबरों में जकड़े थे, उससे उबारने के लिये सद्गुरु कबीर साहब मात्र पाँच वर्ष की आयु में उन्हें गुरु बनाने का संकल्प लिया। स्वामी रामानंद जी का ज्ञान सदगुरु कबीर साहब के आगे बौना नजर आने लगा। ये बात सत्य है कि भक्ति आन्दोलन दक्षिण से रामानंद जी लेकर आये थे लेकिन सात द्वीप नौ खण्ड में सदगुरु कबीर साहब ने ही सद्भक्ति का प्रचार कर चारों दिशाओं में फैलाए। अन्य सगुण सन्तों का ज्ञान जाति व धर्म के बंधन में जकड़े होने के कारण स्वामी रामानंद जी भक्ति आदोलन को गति नहीं दे पा रहे थे। इस कारण सदगुरु कबीर साहब के माध्यम से परमात्मा की भक्ति सर्व साधारण को उपलब्ध हो सकी। कबीर साहब के इस महान कार्य की सराहना विद्वानों ने इस प्रकार की—

भक्ति द्रविण उपजी, लाये रामानंद। प्रगट किया कबीर ने, सात द्वीप नौ खंड।

प्रश्न 3. मुसलमानों के पवित्र स्थल मक्का में सद्गुरु कबीर साहब ने क्या लीला दिखाई ?

उत्तर—सद्गुरु कबीर साहब बलख बुखारा से आते समय मुसलमानों के पवित्र धार्मिक स्थल मक्का पहुँचे। उस समय संध्या हो चुकी थी। यात्रा की थकान के कारण सदगुरु काबा शरीफ के पास ही एक स्वच्छ स्थान देखकर विश्रांति हेतु पौढ़ गये। उसी समय उधर से एक काजी निकला। संयोग से सदगुरु के चरण कमल काबा मस्जिद की तरफ थे। काजी ने सदगुरु को दरवेश फकीर समझा। एक फकीर को पवित्र मस्जिद की तरफ पैर करे सोया देखकर काजी को क्रोध आया । वह सदगुरु के पास नजर तरेर कर क्रोध वेश से बोला-ऐ दरवेश क्या आपको पता नहीं, कि काबा शरीफ की तरफ पैर करके सोया नहीं जाता। यह खुदा का पवित्र स्थान है। दूसरी तरफ पैर करके लेटो। सदगुरु उससे बोले भाई बहुत थका हूँ, मेहरबानी कर मेरे पैर उस दिशा में कर दो जिधर खुदा नहीं है। काजी ने सदगुरु के कथन का रहस्य नहीं समझा, झट से सदगुरु के पैर उठा कर दूसरी तरफ कर दिया। तत्काल चमत्कार हुआ। काजी चकित हुआ जिधर पैर किया, काबा भी उसी दिशा में फिर गया। उसने तीसरी दिशा में पैर कर दिया काबा भी उसी दिशा में फिर गया। काजी सदगुरु के चरण को उठाकर जिधर रखता था, उधर काबा नजर आता था। अंत में काजी थक कर बैठ गया। यह देख कृपालु सद्गुरु बोले—ओ काजी खुदा सब जगह है, जहाँ जिधर तुम देखोगे, उधर ही खुदा का निवास है, ब्रह्म सर्वव्यापक है, काजी भी इस शाश्वत सत्य को समझ गया। उसने सदगुरु के चरण चूमकर माँफी माँगी।

प्रश्न 4. सद्गुरु कबीर साहब के समकालीन किस-किस शासक ने सद्गुरु कबीर साहब की भक्ति स्वीकार की ?

उत्तर—(1) सद्गुरु कबीर साहब के समकालीन शासक में विक्रम संवत 1545 में मुख्य रूप से दिल्ली के बादशाह बहलूद लोदी के पुत्र बादशाह सिकन्दर लोदी, जिनके शरीर में निरन्तर जलन की बिमारी थी। सद्गुरु कबीर साहब की कृपा से शरीर की जलन जन्य पीड़ा शान्त हो गया। बादशाह धन्य हो गया। बादशाह उठ खड़ा हुआ, नतमस्तक हुये, बड़ी प्रतिष्ठा के साथ सद्गुरु कबीर साहब को अपने बराबर आसन में बिठा लिया। जिसे देख शाह सिकन्दर के पीर शेखतकी ने सदगुरु से ईर्ष्या कर बावन कसनी लिया। जो कबीर पंथ के सदग्रन्थ में उल्लेखित है।

(2) उड़ीसा के राजा गजपति (इन्द्रदमन) को जगन्नाथ मंदिर बनाने में सद्गुरु कबीर साहब ने सहयोग किया। राजा जब भी मंदिर बनवाता था, समुद्र की प्रचण्ड लहरें मंदिर को ध्वस्त कर देता था। सद्गुरु कबीर साहब ने समुद्र के किनारे कुबड़ी (आशावाड़ी)गाढ़कर बैठ गया। राजा से कहा कि अब मंदिर बनवाओ। मंदिर बनने पर समुद्र तीव्र लहर के रूप में आया। लेकिन समुद्र सामने सदगुरु को देख ब्राह्मण वेश में आये। सदगुरु ने उन्हें मंदिर ध्वस्त न करने के लिये कहा। उनके स्थान पर बदले के रूप में द्वारका के मंदिर को डुबाने का रास्ता दिखा दिया। सदगुरु ने कहा कलयुग में जगन्नाथ मंदिर की बहुत महिमा होगी। इस प्रकार जगन्नाथ मंदिर बनने पर उड़ीसा के राजा गजपति सदगुरु के समक्ष नतमस्तक हुये।

(3) बलख बुखारे के सुल्तान इब्राहीम हुसैन (अद्धम) को खुदा के साक्षात्कार की तीव्र इच्छा थी। साधु फकीरों को बुलाकर अल्लाह का दीदार कराने के लिये कहते थे और दीदार नहीं कराने पर संतों को जेल में बंद कर चक्की पिसवाता था। सद्गुरु कबीर साहब को इस घटना की जानकारी होने पर तुरन्त बलख बुखारा पहुँचे संत फकीरों को विश्वास दिलाया कि सुल्तान से डरो मत, परमात्मा की भजन करो। साहब कबीर अपने कुबड़ी को चक्की से छुआ दिया। सभी चक्कियाँ अपने आप चलने लगी। समाचार सुन सुल्तान तत्काल जेल में पहुँचे सदगुरु के अलौकिक चमत्कार का देख, सदुगुरु के चरणों में गिर मांफी मांगी और सदगुरु के शिष्य हो गये।

बन्दीछोर कहाइया, बलख शहर मंझार।
छूटे बंधन भेष का, धन-धन कहे संसार।।

(4) सद्गुरु कबीर साहब धनी धर्मदास जी साहब के भवन में सत्यज्ञान का उपदेश करते थे तब बाँधवगढ़ के राजा वीरसिंह बघेल भी सत्संग में आते थे। सदगुरु के उपदेश और उनकी दिव्यता से राजा अत्यंत प्रभावित हुये। राजा ने सदगुरु को अपने महल में आदरपूर्वक निवेदन कर ले गये और वहाँ सदगुरु की शिष्यत्व ग्रहण किया। सदगुरु के आज्ञानुसार राजा ने आनंदी चौका आरती का आयोजन किया।

(5) सदगुरु ने धनी धर्मदास जी साहब को अपने चारों युगों में विभिन्न नाम से प्रगट होने की कथा सुनाये थे। सदगुरु द्वापर में करूणामय स्वामी के नाम से आये थे। उस समय जूनागढ़ के राजा चन्द्रविजय का शासन था। उनकी रानी इन्द्रमति अत्यंत भक्ति मती थी। उन्हें सदगुरु ने साक्षात सत्यलोक और सत्यपुरुष का दर्शन कराये थे। सदगुरु के प्रिय शिष्यों में रानी इन्द्रमती का नाम बड़ी श्रद्धा एवं विश्वास के साथ लिया जाता है।

(6) काशी के उत्तर दिशा में खलीलाबाद का नवाब बिजली खां पठान था, जो सदगुरु कबीर साहब के मुसलमान अनुयायी शिष्य थे। जो सदगुरु के लिये हमेशा मरने मिटने के लिये तैयार थे।

(7) अंबुसागर के सप्तम् तरंग में तारन युग में बंगड़ देश के राजा बंक सद्गुरु कबीर साहब के शिष्य हुए थे।

(8) कबीर सागर खण्ड 5 में राजा भूपाल सद्गुरु कबीर साहब के शिष्य हुये । सदगुरु ने राजा को उपदेश दिये हैं ये कि काल पुरुष जीव को कैसे फांसता और मारता है। बिना सदगुरु के जीव की मुक्ति असंभव है। सदगुरु के चरण-शरण में ही जीव काल के वश में नहीं पड़ता।

(9) कबीर सागर खण्ड 4 के प्रसंगानुसार राजा अमरसिंह सद्गुरु कबीर साहब के शिष्य हुये । यह कमोद युग की कथा है। बहुत दिन बीत जाने पर कोई जीव वापस नहीं आता। कालपुरुष सब जीवों को रोक रखा था। उस समय सदगुरु ज्ञानी जी के द्वारा जीव को विहंग मार्ग का बोध देकर जीवों की मुक्ति का उपदेश दिये।

(10) राजा योग धीर सतयुग में सदगुरु सत्यसुकृत साहब के शिष्य थे। जो बड़ा अभिमानी वेदपाठी भी था।

(11) सद्गुरु कबीर साहब के प्राचीन शिष्यों में विदेह राजा जनक सुप्रख्यात ज्ञानी थे।

(12) राय जगजीवन कबीर सागर खण्ड 5 के अनुसार सद्गुरु कबीर साहब के शिष्य हुये । सदगुरु ने उनके माध्यम से बताये कि माता के गर्भ में जीवों की दशा कैस होती है। तथा सदगुरु की कृपा से जीव बाहर आता है और संसार में आकर सदगुरु की भक्ति भूल जाता है।

प्रश्न 5. भजन पूरा करो—

उत्तर— आज मेरे सदगुरु आये मिहमान, तन मन जिवड़ा करौ कुरबान ।
फूली फिरौं न अंग समान, सतगुरु आवन सुनि लिये कान ।
चंदन चौकी अंगन बिछान, ता पर बैठे सतगुरु ज्ञान ।
फूलन हार सदगुरु पहिरान, चंद चकोर ज्यों इक टक ध्यान ।
प्रेम सहित बिजंन पकवान, कंचन थाल सजाये आन ।
हाथ जोर पुनि विनती ठान, जैवो सदगुरु पुरुष पुरान ।
सीत प्रसाद सदगुरु दियो दान, जम किंकर को मर्दन मान।
धर्मदास अमन गुजरान, साहेब कबीर निछावर प्रान ।।

(धर्मदास की शब्दावली शब्द 6 पृ. 12 विरह और प्रेम का अंग)

धर्मदास पृ-228

●●

तपेदिक अथवा टी.बी. (क्षयरोग)

डॉ. सुनैन बाला

किच्छा, उत्तराखण्ड

इस रोग को पुराने समय में राजयक्ष्मा भी कहा जाता था और तब मृत्युदर बहुत अधिक थी। पांचवे दशक में (19वीं शताब्दी के) Sbeptomycin नाम के इन्जैक्शन की खोज के बाद मृत्युदर में कमी आई। पर अभी भी दुनिया में प्रतिवर्ष 80 लाख नये रोगी Tuberculosis अथवा तपेदिक से संक्रमित होते हैं व 20 लाख लोग इससे मृत्यु को प्राप्त होते हैं जिनमें से लगभग एक चौथाई लोग भारत वर्ष में यानि 3 से 5 लाख रोगी प्रतिवर्ष यहाँ टी.बी. से मरते हैं या एक हजार लोग प्रतिदिन अथवा एक मृत्यु प्रति मिनट पर होती है।

तपेदिक का कारण—एक जीवाणु (बैक्टीरिया) है जिसे Mycobacterium tuberculosis के नाम से जाना जाता है। यह छोटे-छोटे वाष्पकणों (Aeresol droplets) के रूप में वायु में होता है और श्वास द्वारा फेफड़ों के बीच के हिस्से व निचले हिस्से में पहुँच जाते हैं। यह रोग संक्रमित व्यक्ति के अत्यधिक व निरन्तर समीप रहने से दूसरे व्यक्ति में फैलता है। इससे फेफड़े के ऊपर हिस्से (Apices of Lungs), लम्बी हड्डियाँ, आंते, पेट की झिल्ली, मस्तिष्क की झिल्ली, गुर्दे व यकृत प्रभावित हो सकते हैं। यह 4 से 8 सप्ताह बाद रोग प्रतिरोधक क्षमता (Immunity) द्वारा उसी हिस्से में सीमित रहता है व लक्षण तभी प्रकट होते हैं जब प्रभावित व्यक्ति की रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है।

लक्षण—अधिकतर रोगियों में लम्बी खांसी जो तीन सप्ताह से अधिक हो, वजन में निरन्तर कमी, हल्का बुखार शाम के समय में ज्यादा होना, बलगम में हल्का लाल रंग आना इत्यादि। कुछ रोगियों में भूख की कमी व बहुत ज्यादा खून सहित बलगम आना है। Extrapul nonary tuberculosis फेफड़ों के बाहर अन्य संयंत्र भी इस रोग से प्रभावित होते हैं उसमें भी हल्का बुखार व वजन में कमी तो होती ही है। साथ में उस संयंत्र से सम्बन्धित लक्षण भी होते हैं, जैसे हड्डियों के प्रभावित होने से दर्द व नासूर (न भरने वाला जख्म), मस्तिष्क की झिल्ली (Meninges) के प्रभावित होने पर सिरदर्द व हल्की बोहोसी व गहरी बेहोशी (coma) व पेट की झिल्ली (Periitoneum) के प्रभावित होने से जलोदर के लक्षण प्रगट होते हैं।

निदान—टीबी. का निदान बलगम में पाये जाने वाले (Mycobacterium lubereculoses नाम के जीवाणु को Direct smear में Acid fast Bacilla पाये जाने पर होता है अथवा Sputum culture positive होने पर होता है। आजकल अधिक संक्रमित व्यक्ति की बलगम जांच में sputum culture 14 दिन में positive आ जाता है। Extrapulmonary tubercutosis में मुश्किल से पचा चलता है इसके लिये Gastric lavage, bronclvial washing, pleural, pericardiacl, Ascitic Cerebrosinal fluid (C.S.F.) सुई द्वारा Needle aspiration से प्राप्त किया जाता है और culture के लिये भेजा जाता है।

Direct smear बलगम का तीन हफ्ते से अधिक खांसी होने पर हर व्यक्ति का तीन बार किया जाना चाहिये और Positive होन पर तपेदिक की दवा शुरु की जानी चाहिए।

Tuberculin test में P.P.D., tuberaclin syringe द्वारा skin में ही जाती है और 15mm से ज्यादा India uration होने पर Positive माना जाता है।

X-ray Chest—सीना का x-ray करने पर फेफड़ों में दाग Infiltration या cavity आने पर तपेदिक हो सकता है पर अन्तिम निर्णय Direet smear परीक्षण द्वारा ही लिया जाना चाहिये। x-ray में सामान्य Abnormal report दी जाती है।

साधारण खून जाँच—Haemoglobin, Tlc, Dlc, ESR, HIV, Blood sugar और गुर्दे के टेस्ट खून की कमी (Anemia) लम्बे समय के Infection में होती है Tlc, Lumphoyte count बढ़े हुए होते हैं, ESR बढ़ी हुई होती है। Diabetes में blood sugar बढ़ी हुई हो तो टी.बी. का Infection जल्दी होता है। गुर्दे की Chronic बीमारी भी टी.बी. की वजह से हो सकती है।

Management चिकित्सा अथवा इलाज—तपेदिक का ईलाज (ATT) first line drugs द्वारा किया जाता है। इसमें निम्नलिखित दवायें दी जाती है—

Isoniazide (H) 5 mg / kg body wt - oral

Rifampicin (R) 10 mg / kg body wt - oral

Ethambutal (E) 15 mg / kg body wt - oral

Pyrazinamide (Z) 20 mg / kg body wt - oral

Streptomycin (S) 25 mg / kg body wt - I/M Injection

आजकल SCC (short course chemotherapy) में उपरोक्त दवायें दी जाती है जिसमें पहले दो महीने 4 दवायें दी जाती है। HREZ अगले चार महीने सिर्फ दो दवायें दी जाती है बच्चों के लिये, गर्भवती महिलाओं के लिये डायबीटिज के रोगियों के लिये HIV यकृत की बीमारी के साथ टी.बी. व हल्की गुर्दे की बीमारी के साथ टी.बी. में यही दवायें दी जाती है।

नवजात शिशुओं में जिनकी मातायें गर्भाधान के समय टी.बी. से संक्रमित होती है, उनको टीबी. के रोकथाम के लिये तीन महिने तक Isoniazide दवा दी जाती है। वह बीसीजी का टीका हर एक नवजात शिशु को दिया जाता है।

गर्भवती महिलाओं को Streptomycion Injection नहीं दिया जाता क्योंकि वो गर्भस्थ शिशु की बात की सुनने वाली नसों को हानि पहुँचाता है। व pyridoxin नाम की दवा ATT के साथ में 10 एम.जी. प्रतिदिन दी जाती है।

डायबिटीज के मरीजों के लिये Rifampicin दवा देने पर शुगर की दवा बढ़ानी पड़ती है व साथ में pyridoxin दवा दी जाती है।

गुर्दे के मरीजों को streptomrycin, Ethambutol Isoniazide दवायें सावधानी से दी जाती है। के Renal Transplant के मरीजों को rifampicin नहीं देते।

यकृत की बीमारी वाले मरीजों को सब दवायें दी जाती है पर liver function test बार-बार कराये जाते हैं।

बेहोश मरीजों को सब दवायें Ryles tube द्वारा दी जाती है। Inlramuscular injection द्वारा slreptomycin, I/v injection द्वारा quinolones दवायें दी जाती है। HIV के मरीजों में Thiacefacone नहीं दी जाती।

II. Extrapulmonary (फेफड़ों से बाहर की) T.B. के मरीजों में शल्य चिकित्सा दारा और जटिलताएं हैं तो corticosteroids दवायें दी जाती है।

III. Multidrug Resistant Tuberculosis (MDR) अगर दो या उससे अधिक दवायें जैसे Rifampicin और Isonizide से Resistant है तो उसे Multidrug resistant case या MDR कहा जाता है। भारत वर्ष में सबसे ज्यादा ऐसे मरीज पाये जाते हैं क्योंकि कम खुराक लेने पर या समय पर दवा न लेने पर इन दवाओं का असर नहीं होता है।

Management of MDR, cases - इन मरीजों का प्रबंधन (इलाज) खास specialzed centre या अस्पतालों में refer करके किया जाना चाहिए।

Second line - ATT drugs द्वारा इन मरीजों का इलाज किया जाता है।

Kanamycin - 15 mg/kg IM upto 1 gm

Amikacin - 15 mg/kg IM injection upto 1 gm

Ethionamide - 10-15 mg/kg oral route upto 1 gm

Cycloserine - 10-15 mg/kg oral rout upto 1 gm

Para amino salicytic acid (PAS) - 150-250 mg/kg IM upto 12gm

Thiacecazone - 150 mg oral daily

Ciprofloxacion - 10-20 mg/kg upto 1000 to 1500 mg daily

Ofloxacin - 7.5 mg - 15mg upto 400-600 mg daily

इनमें से तीन दवायें जो पहले नहीं दी गई हों। लगातार दवाओं की उपलब्धि हर दो महीने बाद Sputum की जांच जब तक Negative रिपोर्ट (-ve) आये

Sputum culture की रिपोर्ट नेगेटिव आने पर सारी दवायें एक साल तक लेनी जारी रखें। सिवाय उन दवाओं के जो Injection द्वारा दी जाती है।

कुछ रोगियों में जो शल्य चिकित्सा के लायक हों, यह एक विकल्प है चिकित्सा का MDR मरीजों के लिये। अब सम्पूर्ण व सही चिकित्सा द्वारा तपेदिक को लाइलाज बीमारी नहीं माना जा सकता। रोगियों की जागरुकता व जगह जगह सरकार द्वारा DOTS Treatment द्वारा गरीब मरीजों का सरकारी अस्पतालों में मुफ्त इलाज द्वारा nauional T.B. control programone चलाया जा रहा है।

●●

कबीर साहब के अनमोल दोहे

प्रस्तुतकर्ता : **महंत डॉ. राजेन्द्र प्रसाद**

कबीर खड़ा बाजार में, सबकी माँगे खैर ।
ना काहू से दोस्ती, ना काहू से बैर ।।
Kabir khada bazar mein, sab ki mange kheir |
Na kahoo se dosti, na kahoo se bair ||

कबीर साहेब जन समुदाय के मध्य (बाजार) में खड़े होकर सभी की खुशहाली (खैर) की कामना करते हैं। उन्हें किसी समुदाय/व्यक्ति विशेष से न तो दोस्ती है, न बैर है। वे तो सभी का कल्याण चाहते हैं।

Kabir Saheb stands amidst the bazar crowd and wishes for the best to every one. He is not showing special preference to any community / person, either a friend or an enemy. Kabir Saheb wishes welfare to one and all.

अति का भला न बोलना, अति की भली न चूप ।
अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप।।
Ati ka bhala na bolana, ati ki bhali na choop |
Ati ka bhala na varsana, ati ki bhali na dhoop ||

कभी भी अधिक बोलना और अत्यधिक चुप रहना अच्छा नहीं होता है। इसी तरह अत्यधिक वर्षा और अत्यधिक धूप (गर्मी) भी अच्छी नहीं होती है। भाव यह है कि किसी भी चीज की अति अच्छी नहीं होती।

Neither too much talkative nor too much silence is reasonable. In the same way, extremely rainfall and extreme sunshining (heat) is not liked. The sense is that extremity of any thing is not good.

आछे दिन पाछे गये, किया न हरि सों हेत ।
अब पछिताहे होत क्या, चिड़ियाँ चुंग गई खेत।।
Achhe din pachhe gaye, kiya na hari son heit |
Ab pachhitahe hot kya, chidiyan chung gai khet ||

जीवन के अच्छे दिन धीरे-धीरे व्यतीत हो गये और व्यर्थ के कार्यों में उलझ जाने से हरि

(गुरु) से भी प्रेम नहीं कर सके। खेत की फसल को चिड़ियों द्वारा चुँगे जाने के बाद पछताना मात्र रह जाता है। अर्थात अवसर निकल जाने पर पछताने से कोई लाभ नहीं होगा।

The golden and happy days of life have gone past and due to immersion in the worldly attractions, I did not show my love to the God (Guru). Now, it is no use to cry over split milk. So it is useless to be regrettable when opportunity has been lost.

आया है सो जायेगा, राजा रंक फकीर।
एक सिंहासन चढ़ि चले, एक बंधे जंजीर।।
Aaya hei so jayeiga, raja rank fakir |
Eik singhasan chadhi chale, eik bandhe janzeer ||

इस संसार में जिसने भी जन्म लिया है उसे जाना ही पड़ेगा, चाहे वह राजा, रंक या फकीर कोई भी हो। अन्तर इतना है कि शुभ कार्य करने वाला शुभगति रूपी सिंहासन पर बैठ कर जाता है और दूसरा दुष्कर्मों की जंजीर में बंधकर जाता है।

Anybody who is born in this world, whether a great king, a pauper or a saint must has to face death. The difference is only this that some depart from this world sitting on throne and some others go tied with chains according to their good or bad deeds.

ऊँचे पानी ना टिके, नीचे ही ठहराय।
नीचा होय सो भरि पिये, ऊँचा प्यासा जाय।।
Unche pani na tike, niche hi thaharaya |
Nicha hoya so bhari piye, uncha pyasa jaya ||

ऊँची जगह पर पानी कभी नहीं ठहरता, वह तो नीचे स्थान पर ही ठहरता है। नीचे स्थान पर रहने वाला व्यक्ति पानी को भर-भर कर पीता है परन्तु ऊँचाई पर रहने वाला प्यासा ही चला जाता है। भाव यह है कि विनम्र स्वभाव वाले व्यक्ति को परमात्मा के आनन्द की प्राप्ति होती है जबकि अभिमानी व्यक्ति घमंड के कारण अतृप्त रह जाता है।

Water never stays on elevated land but comes downward way and acumulated in low areas (pool). The person who resides in low lands can drink water to his fill but the highlander has to go thirsty. The sence lying in this is that the person low with humility can enjoy the real bliss of God but the proudy unbending has to go thirsty back with vanity.

Cont...

ममता अजहूँ न मरी

-दर्यावदास,

सद्गुरु कबीर साहेब सत्यपुरुष की जगत रचना पर संसार के जीवों को सत्यपुरुष के प्रेम की भाष दिलाते हं कि मृत्यु की गोद में नहीं आ सकती। क्योंकि संसार उत्पत्ति पानी से हुई है। परन्तु जिससे पानी की उत्पति है इस रंग को कोई नहीं जानते रंग ही से रंग की उत्पति हुआ है और एक ही रंग से संार बहु रंगी कहा जाता है। इस बहुरंग की ममता को जानना सत्यपुरुष को जानने का प्रतीक कहा जा सकता है देखा जाय तो सृष्टि रचना के पूर्व ममता सत्यपुरुष में समाहित सत्यपुरुष की इच्छा से अमी तत्व की देह धर निरंजन पुरुष को प्रगट किये । उनको सत्यपुरुष से श्वास रूपी प्रेम ममता दी गई जिस नाद निरंजन बिन्दु सकल जगत का प्रसारण हुआ और आप भी देह विदेह से न्यारे ही रहते हैं। इस सत्यपुरुष की ममता से संसार का संरक्षण हो रहा है। यही सत्य पुरुष इस ममता को अपने आपमें समाहित कर ले । तो सम्पूर्ण संसार बिन्दु एक में समाविष्ट होकर अनक बिन्दु का अस्तित्व मिट जायेगा। इस ममता रूप खेल के रंग ो सत्यपुरुष संसार मे खेलते हैं और संसार को खिलाते हैं अमी तत्व से निरंजन पुरुष ने देह धरी तब निरंजन पुरुष को सत्यपुरुष ने अपनी श्वासा से मुक्त दीक्षा दी गई। संसार में भी मूल दीक्षा जीव समूह को श्वास रूपी समसर पवन से जन्म लेते ही मिलती है। यह रिती मूल दीक्षा की संसार में चलते आई है। निरंजन पुरुष ने भी इसी मूल दीक्षा के प्रभाव से तीन गुणों का निर्माण कर। आप अलख पुरुष का स्थान प्राप्त कर सिंहासन पर बैठे। उनको अहार के रूप में शब्द अहार सत्यपुरुष ही से मिला। जिससे उनकी जन्म मरण की क्षुधा मिट गई। इस बहुरंगी खेल को सदगुरु कबीर वाणी द्वारा कुछ अंश में प्रमाणित किया जाता है

रंग ही रंग उपजाया, एक रंग से सब रंग आया ।

बहु रंगी से पानी भयउ, पानी रंग नाद जो कियऊ।

जब श्वास सांह ही उठाई, मूल दीक्षा प्रथम कहाई ।

सिंहासन बैठी सुख पावा, शब्द अहार पुरुष संग आवा ।

(ज्ञान स्थिति)

निरंजन आदि सोलह सुत सत्यपुरुष के खास से प्रगट हुए और श्वासा को शब्द भेद स जीव समूह में जान गया। निरंजन पुरुष ने श्वासा के भेद से चार वेदों का निर्माण किया । वेद निर्माण का खेल नाद रंग से संसार में प्रभावित हुआ है नाद पुत्र निरंजन ने श्वासा को ही अपना गुरु समझा और श्वासा बिन्दु से शब्द भेद को जानकर सकल जगत का प्रसारण किया और आप भी देह से विदेह शब्द को जानकर विदेह में रहने लगे। पुरुष की माया रूपी ममता आध्या ने त्रिगुणात्मक सृष्टि पर अपना ही कर्ता रूप जगत को समझाने में त्रिगुण का साथ लिया और त्रिगुणों के हाथ में वेद वाणी को देकर । जगत से कहा कि संसार के निर्माता में ही हूँ ।

●●

गुरु-भक्ति का अनुपालन

श्रीमती पूनम शर्मा, रायपुर

कबीर पंथ के इतिहास में धर्मनि-आमिन की जोड़ी के द्वारा की गई गुरुभक्ति बेमिसाल है । उन्होंने सदगुरु कबीर साहब की भक्ति जिस निष्ठ, प्रेम और अनुराग के साथ की, वह चिर स्मरणीय है। इन दोनों ने सदगुरु को पाया, उनकी भक्ति करके संसार को दिखाया, सुनाया और कबीर पंथी जगत को भक्तिमय बनाया। सदगुरु कबीर साहब और धनी धर्मदास साहब की गुरु-शिष्य परम्परा आज इस जगत में विद्यमान है और गुरु भक्ति का जीवन्त उदाहरण प्रस्तुत करती है इसलिये कबीर पंथियों को धनी धर्मदास साहेब की गुरु परम्परा के वंशगुरु तथा उनसे जुड़े गुरु (कड़िहार) की ही भक्ति करनी चाहिए क्योंकि वंशगुरुओं को ही गुरु भक्ति का तरीका ज्ञात है तथा गुरुभक्ति की मर्यादा भी जानते हैं । इसलिये कबीर पंथ की इस मूल गद्दी का अनुसरण करते हुए गुरु भक्ति करने का तौर-तरीके के सम्बन्ध में प्रकाश डालने की कोशिश यहाँ पर की जा रही है।

कबीर साहब के प्रमाण के अनुसार गुरु को परमात्मा से भी बढ़कर समझना चाहिए।

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूँ पाय ।
बलिहारी गुरु आपनी, गोविन्द दियो बताय ।।

अर्थात् कबीर साहब कहते हैं कि हमारे सामने कभी ऐसी घटना घट जाय कि गुरु और परमात्मा दोनों एक साथ प्रकट हो जाय तो हमारा इस दुविधा में पड़ना स्वाभाविक है कि पहले किसको प्रणाम किया जाय। अगर गहराई में उतरकर सोचा जाय तो स्वयं उत्तर मिल जाता है कि आखिर गुरु ने ही परमात्मा के दर्शन कराये हैं। अत: पहले गुरु को ही बंदन करना चाहिए। और फिर प्रगट हुए परमात्मा को प्रणाम किया जाय। हमारे दिल में जब ऐसा भाव पैदा हो जाएगा कि वास्तव में वंशगुरु ही परमात्मा है, तब ही हमारे अन्तर के पट खुलेंगे। हालांकि कबीर साहब स्वयं सत्यपुरुष समर्थ तथा परम ज्ञानी हैं, फिर भी उन्होंने रामानंद स्वामी को लौकिक गुरु बनाकर बड़ी श्रद्धा और विश्वास के साथ संसार को गुरु भक्ति का पाठ पढ़ाया। कबीर साहब कहते हैं—

सत गुरु के प्रताप से, मिटि गये सब दु:ख द्वन्द।
कहे कबीर दुविधा मिटी, गुरु मिले रामानन्द।।

एक भक्त की भूमिका अदा करते हुए कबीर साहब कहते हैं कि सदगुरु की दया से ही भवसागर का दुख मिटता है। बात भी सच है, क्योंकि गुरु धारण न करने से पहले लोग कबीर साहब की सच्ची बातों पर विश्वास नहीं करते थे। लोग कहते थे कि कबीर साहब बिना गुरु के आपका ज्ञान प्रमाणित नहीं है। हम आपकी बातें कैसे माने।

न हरगिज ज्ञान दुनियां में, कभी प्रमाण होता है।
बिना किसी गुरु के पास जाये , अपने कान फुंकवाए।

समर्थ पुरुष कबीर साहब द्वारा स्वामी रामानंद जी को मात्र लौकिक गुरु बनाने के साथ ही संसार के लोगों की सारी दुविधा मिट गई और फिर लोग कबीर साहब के उपदेशों पर विश्वास करने लगे । संसार के लोगों को गुरुभक्ति सिखलाने के लिये सत्यपुरुष (कबीर साहब) को भी गुरु को बीच में लाना पड़ा। संसार के इतिहास में आज हम जितने भी महापुरुषों की गाथा पढ़ते हैं वे सब महापुरुष गुरु की शरण में आने के पश्चात ही महापुरुष बन पाए। जिसने भी गुरु का विरोध किया, वह इस लोक तथा परलोक में कहीं भी नहीं टिक पाया। डूब मरा, न घर का राह, न घाट का। गुरु विमुख आदमी के जीवन में मुसीबतों का जाल बिछ जाता है। और परमात्मा भी उनकी

मदद नहीं करते। कबीर साहब कहते हैं—

कबिरा हरि के रूठते, गुरु के शरणे जाय।
कहैं कबीर गुरु रूठते, हरि नहीं होत सहाय।।

जब आदमी पर परमात्मा नाराज हो तो उस आदमी को गुरु का आसरा लेना चाहिए। लेकिन गुरु से उपदेश लेकर फिर गुरु के खिलाफ हो जाना बहुत खराब बात है, जिसे कृतघ्नी या गुरु द्रोही कहते हैं। अज्ञानी आदमी का दोष अधिक नहीं माना जाता है। दोष तो उसी का है जो गुरु से दीक्षा, उपदेश, ज्ञान, गुण, पद आदि लेकर फिर खिलाफ हो जाता है और अपने स्वार्थ वश जगह-जगह गुरु की निन्दा करता फिरता है। ऐसा व्यक्ति कपटी है, नीच है, निगुरा है, कृतघ्नी है, चाण्डाल है। ऐसे लोग निगुरा से भी पतित की श्रेणी में गिने जाते हैं। कबीर साहब कहते हैं—

निगुरा एकहि नहीं मिले, पापी मिले हजार।
इक निगुरा के शीष पर, सौ पापी का भार।।

अर्थात् नगुरे का मुंह मत दिखाना। भले ही पापी लोग हजार ही मिला देना। संसार में सबसे बड़ा अपराधी निगुरा है। एक आदमी को मारने वाला हत्यारा (महापापी) कहलाता है, लेकिन निगुरा एक सौ आदमियों की हत्या करने के बराबर अपराधी है इसलिये सन्त निगुरे का मुंह तक नहीं देखना चाहते। इस्लामी पीरों का तो कहना है कि अगर निगुरे आदमी के मकान की छाया अपने मकान पर पड़ती हो तो उस मकान को ही छोड़ देना चाहिये। निगुरे के हाथ का पानी पीने से बारह वर्ष तक की गई गुरु भक्ति का नाश हो जाता है। निगुरे की संगति पागल कुत्ते के समान होती है। ठीक इसी तरह निगुरे की संगति से भक्त भी नर्कवासी हो जाता है। इसीलिए गुरु भक्ति करने वाले भक्त को निगुरे से दूर रहना चाहिए।

भक्त को वंशगुरु के चरण कमलों का ध्यान, चरणामृत, दर्शन, चरण पूजा तथा महाप्रसाद ये पांच क्रिया करना चाहिए। गुरु के चरण कमलों के ध्यान से सांसारिक विघ्न दूर होते हैं और भ्रम का पर्दा हटकर हृदय में पवित्रता आती है। अर्न्तमुख होने का तरीका गुरु के स्वरूप का ध्यान ही है। इसी ध्यान के सहारे सत्यपुरुष के दर्शन होते हैं। गुरु के चरणामृत का भक्त के जीवन में बड़ा ही महत्व है। गुरु के चरणामृत से हृदय पवित्र होता है, शरीर सभी अवयवों को सम्बल मिलता है। अन्तरात्मा की खुराक गुरु का चरणामृत है। गुरु से बन्दगी करते समय हमारा सिर गुरु के चरण कमलों से छू जाना चाहिए। गुरु के चरण कमल ज्योति स्वरूप है। हमारा माथा गुरु साहिब के चरण कमलों में जैसे ही स्पर्श होता है त्योंहि हमारे सिर पर चढ़े सभी पाप भस्म हो जायेंगे। इसीलिये गुरु साहिब से भेंट पायलगी बंदगी करते समय माथा गुरु साहिब के चरण कमलों से छू जाना चाहिये। गुरु साहिब के दर्शनों का भक्त के जीवन में बहुत बड़ा महत्व है। गुरु कृपा भक्त पर तभी होगी जब वह गुरु साहिब के दर्शन करेगा। जब चेला गुरु जी को देखेगा ही नहीं तो फिर गुरु साहिब की कृपा दृष्टि कैसे हो सकती है ? कदापि नहीं हो सकती। गुरु साहिब के दर्शनों से ही कृपा दृष्टि या दया की नजर का गुरु भक्त को लाभ मिलेगा।

गुरुदेव की शरण का भक्त के जीवन में बहुत बड़ा महत्व है। धनी धर्मदास जी साहब अपनी छप्पन करोड़ की पूँजी को गरीबों में लुटाकर सदगुरु कबीर साहब की शरण में चले गये थे और अंतिम श्वांस तक सदगुरु के साथ रहे। सदगुरु के साथ रहने से ही तो धर्मदास जी को मुक्ति का सारा भेद मिल गया था। सत्संग, टकसारी बानी, गुरुवाई भेद, सत्यनाम (सार शब्द) आदि सदगुरु कबीर साहब की शरण में जाने से ही धर्मदास जी को मिले थे। नाश होने वाले सांसारिक धन को छोड़कर सत्यनाम रूपी धन से सम्पन्न होकर धनी धर्मदास जी कहलाए। इसलिये

गुरु भक्त में तल्लीन रहकर जीवन के ज्यादातर समय को सदगुरु की शरण में ही बिताना चाहिए। श्वास-श्वास में सदगुरु का ही नाम लेते रहना चाहिये। सारा जीवन सदगुरु के भरोसे पर ही बिताना चाहिये। तन, मन, धन सब कुछ सदगुरु को अर्पण कर देना चाहिए। सदगुरु की आज्ञा का कभी भी उल्लंघन नहीं करना चाहिए।

सदगुरु शब्द उलंघ करि, जो कोई शिष्य जाय।
जहाँ जाय तहँ काल है, कहे कबीर समझाय।।

गुरु को साधारण आदमी नहीं समझना चाहिये बल्कि परमात्मा ही समझना चाहिये। गुरु भक्ति के मामले में दुनियादारी की शर्म नहीं करनी चाहिए। जब कभी भी गुरुदेव से मिले तो उस समय दौड़कर भेंट, पाँयलगी करना चाहिए। तभी तो देखा-देखी लोग गुरु भक्त बनेंगे। अत: गुरु को परमात्मा समझना चाहिए।

गुरु को मानुष जानते, ते नर कहिये अंध।
होय दुखी संसार में, आगे यम को फंद।।

गुरु की निन्दा करना महापाप है और गुरु की निन्दा व काट-छांट सुनना भी जुल्म है।

निज मुख जो गुरु निन्दा करहीं, कल्प सहस्र नर्क में परहीं।
गुरु की निन्दा सुने जो कोई, सूकर स्वान जन्म ते होई।।

गुरु से बैर भाव रखना भी शिष्य की बड़ी मूर्खता है। गुरु की निन्दा करने वालों को तो कबीर साहब बहुत खरी खोटी सुनाते हैं—

गुरु निन्दक से कुत्ता भला, हटके माड़े सारि ।
निन्दक से क्रोधी बुरा, गुरु दिवावे गारि।।

खाली हाथ गुरु की भेंट, पायलगी, बंदगी नहीं करनी चाहिए ।

मुफ्त बन्दगी करत है, मुक्त ही लेत आशीष।
काहू के घर ऊँट बनोगे, लादोगे मन बीस।

गुरु के सामने घमण्ड करना, गुरु से बहसबाजी करना, गुरु की छाय पर पांव देना, गुरु को पीठ देकर चलना तथा गुरु से झूठ कपट करना महा पाप है। सदगुरु कभी भी खोटी बात नहीं कह सकते। अत: गुरु जो भी कहे उसे मान लेना चाहिए। जैसे माता अपने बच्चे को जहर नहीं दे सकती। इसीलिये एक बहुत ही सुन्दर कहावत प्रचलित है कि-

खाना तो माँ के हाथ का हो भले ही जहर ही।
छाया तो मौके की भली हो भले की केर ही।
चलना तो मार्ग का हो भले ही फेर ही।

गुरु का हर आदेश हमारी भलाई के लिये होता है इसलिये गुरु जो भी कहे उसे मान लेना चाहिए। अगर गुरु गांव में विराजते हैं तो दिन में दो वार गुरुदेव के दर्शन करने चाहिये। सुबह तथा शाम। अगर गुरु शिष्य के घर से एक किलोमीटर दूर विराजते हों तो दिन में एक बार जरूर दर्शन करने जाना चाहिए। अगर गुरु साहिब शिष्य के निवास स्थान से पाँच किलोमीटर दूर विराजते हों तो सप्ताह में एक दिन जरूर दर्शन करने के लिये जाना चाहिए। अगर गुरु महाराज सेवक के आवास से बीस किमी. दूर हो तो पखवाड़े में यानि पन्द्रह दिन में एक बार जरुर दर्शन करने जाना चाहिए। अगर भक्त के रहवास से गुरु महाराज का आश्रम पचास किलोमीटर दूर है तो महीने में एक

बार पूर्णिमा व्रत के दिन जरूर ही दर्शन सत्संग तथा सेवा करने के लिये जाना चाहिए। अगर गुरु प्रभू के आश्रम से सेवक दो सौ किलोमीटर दूर रहता है तो छः माह में एक बार जरूर दर्शन के लिये जाना चाहिए। अगर दास गुरु दयाल से एक हजार या उससे अधिक किलोमीटर की दूरी पर रहता हो तो हर हाल में वर्ष में एक बार गुरु साहब के दर्शन करना चाहिए। कबीर साहब कहते हैं—

बिन दरसन नहीं गुरु के रहिये, यह दृढ़ नियम हृदय में गहिए।

××× ××× ×××

बरस दिना नहीं करि सकै, ताको खावे काल।

अर्थात् वर्ष में एक बार ही गुरु के दर्शन नहीं करने वाले सेवक को निश्चित ही काल खा जाता है यानि उसमें काल समा जाता है। कालपुरुष निरंजन उसके मन मस्तिष्क में प्रवेश हो जाता है जिससे सेवक के मन, बुद्धि, वाणी तथा आत्मा पर काल अधिकार कर लेता है। सेवक की पहले की भक्ति को काल खत्म कर देता है। इसलिये गुरु साहब के दर्शनों का सेवक के जीवन में बहुत बड़ा महत्व है। गुरु की सेवा का बड़ा ही गहरा विचार है। सदगुरु कबीर साहब कहते हैं—

माता-पिता औरहूँ मिलै, लख चौरासी मांहि।
गुरु सेवा अरू बन्दगी, फेर मिलन की नाहि।।

ज्यादातर लोग गुरु बनाकर अपने निगुरेपन का भार उतारते हैं। दीक्षा लेने के बाद गुरु के पास ही नहीं जाते हैं और कहते फिरते है कि मैं गुरुमुखी हूँ। कठी टुटने तथा खो जाने पर खुद ही पहन लेते है। यह तरीका बहुत ही गलत है। समय-समय पर गुरु दर्शन के लिये जाना चाहिए। सेवक वही है जो गुरु की सेवा करने के लिये हमेशा उतावला रहे। गुरु की आज्ञा का तो पालन फटाफट करना है। कुछ सेवा कार्य। जैसे-गुरु स्थान की व्यवस्था को बनाए रखना, आवश्यकता के समय गुरु की तन, मन व धन से मदद करना, साल में एक बार गुरु साहिब को घर बुलाकर सत्संग चौका-आरती तथा पधरावनी करना। गुरु आश्रम के निर्माण में पूरी-पूरी मदद करना। गुरु आश्रम की साफ सफाई का पूरा-पूरा ध्यान रखना। गुरु आश्रम को इस प्रकार सजाना चाहिए कि मानों सत्यलोक यही है। गुरु आश्रम में साज बाज, बर्तन, वाहन तथा रहने, सोने की व्यवस्थाएँ करना। गुरु आश्रम को अपने घर से भी ज्यादा समझना आदि बातों का पूरा-पूरा ध्यान रखना चाहिए। जन-कल्याण के लिये गुरु कुछ भी मांगे तो उसी समय बिना किसी हिचकिचाहट के तुरन्त दे देना चाहिए। गुरु को दिया हुआ हजार गुना होकर सेवक को वापिस मिल जाता है। कबीर साहब कहते हैं-

जो कुछ श्रेष्ठ पदारथ पावै। सो गुरु चरणन आनि चढ़ावै।।
गुरु की अद्भुत है प्रभुताई। मिलै सहस्र गुना होइ आई।।

सदगुरु कबीर साहब तो यहाँ तक कहते हैं कि यदि गुरु का शिर देने के लिये कहे तो हमें तैयार रहना चाहिए।

गुरु जो मागे शीष तत्क्षण दीजै काटि।

गुरु भक्त एकलव्य ने द्रोणाचार्य के मांगते ही अपना दाहिना हाथ का अंगूठा तुरंत काटकर दे दिया था। जिसका नतीजा यह हुआ कि एकलव्य की प्रतिष्ठा हजारों वर्षों से आज तक तथा आने वाले समय में रहेगी। सारा संसार एकलव्य के त्याग की बात सुनकर गुरु भक्ति की तरफ तुरन्त झुकने की इच्छा करता है। एकलव्य के प्रति सभी सन्तों व महापुरुषों की पूरी-पूरी श्रद्धा है। उसका नाम अमर हो गया। द्रोणाचार्य का भले ही कुछ भी न हुआ

हो, लेकिन एकलव्य की गुरु भक्ति में बिल्कुल कसर नहीं थी । कबीर साहब कहते हैं-

एक डाल दोई पंछी बैठे, एक गुरु इक चेला।
गुरु की करनी गुरु ही जावै, चेला की करनी चेला।।

गुरु भक्ति के तरीकों में, शबरी भीलनी भक्तिमती का एक बहुत ताजा उदाहरण है। जब शबरी बगीचे में गई तो उस मौसम में बेर पकने का समय था। शबरी के उस समय के गुरु प्रभु भगवान राम थे। शबरी तन मन से भगवान राम की सेवा भक्ति में लगी हुई थी। बेर के वृक्ष पर चढ़ गई और बड़े प्रेम से अपने गुरु प्रभु के लिये बेर इकट्ठा करने लगी। उसे अपने मन में संदेह हो गया कि कहीं खट्टे बेर मेरे प्रभु के पास न चले जाये । तब शबरी बेरों को चखने लगी । जो बेर खट्टा होता तो स्वयं पा लेती तथा जो बेर मीठा लगता तो अपने गुरु प्रभु राम के लिये रख लेती। इस तरह के प्रेम से भरे हुए बेरअपने गुरु प्रभु के सामने लाकर रख दिए। भगवान राम ने बड़े प्रेम` उन बेरों को पा लिया। अत: अति उत्तम जो वस्तु हो उसे ही गुरु के चरणों में चढ़ा देना ही सच्ची गुरु भक्ति है। गुरु महिमा में धनी धर्मदास साहब कहते हैं-

असन, वसन वाहन अरु भूषण। सुत दारा अरु परिचायक गण।।
करि सब भेंट गुरु के आगे। भक्ति भाव उर में अनुरागे।।

शबरी भीलनी के सम्बन्ध में सदगुरु कबीर साहब कहते हैं-

शिबरी जात कुलहीन हती जिन चाखि-चाखि फल बीना।
प्रीति जानि ताके फल खाये शंका तनिक करी ना।।

कसौटी व परीक्षा में उत्तीर्ण होना गुरु भक्ति की सच्ची पहचान है। हकीकत में गुरुदेव परम दयालु हैं। शिष्य की भावना अपना सिर देने की होने पर भी उससे कुछ नहीं लेते। केवल परीक्षा जरूर लेते हैं। परीक्षा के सम्बन्ध में कबीर साहब कहते हैं-

पड़ा रहो दरबार में, धक्का धनी का खाय ।
कबहूंक धनी निवाजिहैं, जो दर छांड़ि न जाय।।

सदगुरु के दरबार में कंकरों में ही पड़े रहो। शिष्य से भूल व गलती हो जाती है, तब गुरुदेव उसे फटकार देते हैं। यहाँ तक कह देते हैं कि भग यहाँ से, निकल जा आश्रम से तथा अब कभी भी आश्रम धाम पर मत आना। लेकिन इतना सब कहने पर भी शिष्य को गुरु साहब के द्वार को नहीं छोड़ना चाहिए। अपनी गलती पर गुरुदेव से बारम्बार हाथ जोड़कर क्षमा मांगना चाहिए। भूखा, प्यासा गुरु के दरबार में पड़े रहना चाहिए। आखिर सदगुरु साहिब बड़े दयालु हैं, कृपालु हैं, दयावान है व क्षमावान है। दर पर पड़े हुए शिष्य पर दया कर ही देंगे। शिष्य में यह विवेक होना चाहिए कि गुरुदेव का दरी खाना छोड़ने पर तो तीन लोक में भी ठौर नहीं है। सदगुरु कबीर साहब कहते हैं-

कबीर ते नर अन्ध है, गुरु को कहते और ।
हरि रूठे गुरु शरण है, गुरु रूठे नहीं ठौर ।।

गुरु भक्त को बहुत ही सावधानी रखनी है कि गुरुदेव को कभी भी नाराज नहीं करना है। अगर भूल से गुरुदेव नाराज भी हो जांच तो तुरन्त गुरुदेव को अपनी सेवा भक्ति से व क्षमा मांगकर राजी कर लेना चाहिए। साहब

कबीर कहते हैं—

जो गुरु रूठा होय, तो तुरत मनाइये।
होय रहे चरण अधीन चूक बगसाइए।।

गुरु नाराज होते ही काल माया का मन बुद्धि व शरीर में प्रवेश हो जाता है। जिनसे मन चंचल व मलिन हो जाात है। बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है और शरीर रोगी हो जाता है। जीव नर्क का भागीदार हो जाता है। गुरु की दया की नजरिया या कृपा दृष्टि हर समय शिष्य पर बनी रहे तो जीव मुक्त हो जाता है।

यह एक कुदरती नियम है कि जो बगसीस करते हैं वे वापिस लेने की भी शक्ति रखते हैं। एक बार भगवान शंकर ने भस्मासुर राक्षस से प्रसन्न होकर भस्म कड़ा बगसीस कर दिया। भस्म कड़ा पाते ही राक्षस का मन बिगड़ा। उसने शिव जी को भस्म करके पार्वती जी लेने की सोच ली । लेकिन शंकर जी उस राक्षस को भस्म कैसे कर सकते थे। आखिर भगवान विष्णु की करतूत से भस्मासुर को ही भस्म होना पड़ा और भस्म कड़ा पुन: शंकर भगवान को मिल गया। इसी तरह सदगुरु शिष्य को राजी होकर नाम, पान, पाजी, भक्ति, ज्ञान गुण, शक्ति, सम्मान सर्वसिद्धि व लाभ देते हैं । सब कुछ गुरुदेव से प्राप्त होने पर भी शिष्य को गुरु के सामने हमेशा लााचर दीन, हीन व आकिंचन ही बने रहना चाहिए। केवल काल, माया, भूल व अहंकारवश कई शिष्य गुरु की खिलाफत करना शुरू हो जाते हैं। गुरु से वैर भाव रखते हुए, यहाँ तक कि गुरु को मटियामेट करने पर भी उतारू हो जाते हैं । लेकिन यह उनकी अनाधिकार चेष्टा पार नहीं कर सकती। उल्टा उस खिलाफत करने वाले शिष्य का ही सर्वनाश हो जाता है। गुरु की खिलाफत करने वाले चारों युगों से आज तक नर्क में पड़े हुए सड़ रहे हैं। ऐसे शिष्य को कहीं भी जगह नहीं है।

सदगुरु कबीर साहब कहते हैं-

तिस अपराधी जीव को तीन लोक नहिं ठौर।

संसार के कुछ लोग गुरु बनने के लिये गुरु धारण करते हैं। गुरु से आधा-अधूरा भेद सीखकर तथा गुरु के सहारे से पद या गुरुवाई पंजा प्राप्त कर गुरु की खिलाफत करने वाला तथा गुरु विमुख होने वाला अगर गुरुवाई करे, पूनोव्रत करे, चाहे नाम सुमिरन करे तथा कुछ भी भक्ति का क्रियाकलाप करे वह सब बेकार है। ऐसे कालदूत द्वारा किया जाने वाला कोई भी कार्य नाजायज है तथा निष्फल है। सदगुरु कबीर साहब ऐसे गरु द्रोही लोगों से सावधा रहने के लिये कहते हैं कि-

गुरु सीढ़ी से ऊतरे शब्द बिहूना होय।
वाको काल घसीटि हैं, बाचि सकै ना कोय।।

जिस गुरु के माध्यम से ज्ञान प्राप्त किया है यदि शिष्य उसी गुरु की खिलाफत करता है तो ऐसा व्यक्ति भी निगुरा माना जायेगा। कबीर साहब कहते हैं कि-

जो निगुरा सुमिरन करै, दिन में सौ-सौ बार।
नगर नायका सत करै, जरै कौन की लार।।

जो कुछ भी भक्ति संबंधी क्रियाकलाप चौका-आरती, नाम, सुमरण, भजन भाव, सत्संग, ज्ञानयोग, भक्ति, योग, व्रत, धर्म, नियम आदि है। ये सब गुरु की कृपा से ही पूर्ण होते हैं अत: गुरु की भक्ति सभी मर्यादाओं का अनुपालन करते हुए बड़ी सावधानी से करनी चाहिये, तभी भक्त का कल्याण सम्भव है।

●●

नाम की श्रेष्ठता

सदगुरु कबीर साहेब के पास एक साधु ने प्रश्न किया कि महाराज मुझे अर्थ, धर्म काम मोक्ष की युक्ति बताओं। मुक्ति किस प्रकार होगी। सदगुरु कबीर साहेब ने उस साधु से कहा कि अमुक स्थान पर उजाड़ में एक कुतिया ने चार बच्चा दिया है उन चारों में से एक बच्चा अबलक (चितकबरा) रंग का है। उसके पास जाओ, मेरा नाम लेकर यही प्रश्न करो। तब वह साधु उस उजाड़ में गया। उस कुतिया को उसके बच्चों सहित वहाँ पाया। अबलक रंग के बच्चे के सामने यही प्रश्न किया। जब उस बच्चे के कान में कबीर साहब के नाम का शब्द बड़ा तो वह उसे सुनते ही मर गया। फिर वह साधु सदगुरु कबीर साहेब के पास आया। घटना बताया, सद्गुरु ने कहा कुछ दिवसों पर्यन्त संतोष करो।

कुछ दिवस के बाद सदगुरु ने कहा कि साधु तुम उस भंङी के घर जाओ उसके यहाँ एक बालक पैदा हुआ है। उसके पास जाकर यही प्रश्न करो। साधु उस भंङी के घर गया। वह उस बालक से यही प्रश्न किया । कबीर साहब का नाम सुनते ही लड़का मर गया। तब वह भंङी रोने लगा, इस साधु ने क्या कहा कि मेरा बालक मर गया। वह साधु भाग कर कबीर साहब के पास आया। समस्त वृत्तांत कह सुनाया । सदगुरु कबीर साहेब ने उस साधु से कहा कि कुछ दिन और ठहरो। फिर कुछ दिनों के बाद सदगुरु ने उस साधु से कहा कि अमुक राजा के घर जाकर मेरा ना लेना। राजा के घर पुत्र उत्पन्न हुआ है । वह बच्चा तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर देगा। वह साधु भयभीत होकर कहने लगा। महाराज यह कार्य मैं कदापि नहीं करूंगा। क्योंकि दो बार आपका नाम लेकर मैं कौतूहल देख चुका हूँ। कुतिया और भंङी का बच्चा मर गया।

अब मैं राजा के बालक के सामन जाकर आपका नाम लूँ वह भी मर गया तो मेरी बुरी गति बनायेगा। तब सदगुरु कबीर साहेब ने साधु को विश्वास दिलाया कि वह राजकुमार मरेगा नहीं तब वह साधु उस राजकुमार के समीप गया। कबीर साहब नाम लेकर अपना प्रश्न किया उस समय वह राजा का पुत्र बोला कि साधु कान लगाकर सुन मैं उस कुतिया का अबलक बच्चा हूँ जिसको पहले आपने कबीर साहब नाम सुनाया था। उस नाम के सुनते ही मेरी कुत्ते की देह छूट गई, मैंने भङी के घर जन्म पाया, पशु से मनुष्य हुआ फिर आपने जाकर जब मुझे सदगुरु कबीर साहेब नाम सुनाया तब मेरी भङी की देह भी छूटी। उसी नाम के प्रभाव से अब मैं बादशाह का पुत्र हो गया अब मैं इस देह द्वारा परमधाम को सिधाऊँगा। फिर कदापि आवागमन न होगा। अत: जिस जीव पर सत्यपुरुष की दया हुई वह पशु भी इस सीमा पर्यन्त पहुंच गया।

मनुष्य की गणना क्या है। यह बात सुन नाम की श्रेष्ठता स्वचक्षु से देखकर वह साधु आकर सदगुरु कबीर साहेब के चरणों पर गिरा। सत्यपुरुष की कृपा ही मनुष्य के लिये यथेष्ठ है। दूसरी बात कुछ भी नहीं। सत्यपुरुष ही सबका कर्ता है। चाहे तो एक पल में समस्त संसार को मुक्ति प्रदान कर दे। दूसरे किसी में यह सामर्थ्य नहीं।

(कबीर मंसूर पृ. 496)

धर्मनि-आमिन के वचनों में सारग्राहिता

-पंथ श्री गृन्धमुनि नाम साहब

धनी धर्मदास जी साहब और आमिन माता की समस्त वाणियों में निहित उपदेशों का निचोड़ निम्नलिखित पांच वाक्यों द्वारा संक्षेपतः प्रकट किया जा सकता है-

१. विश्व का मूल परम तत्व और अद्वितीय है तथा प्रत्येक व्यक्ति उससे तत्वतः अभिन्न है।

२. उक्त अभिन्नता की अनुभूति अथवा इस प्रकार की स्वानुभूति पर ही आदर्श आध्यात्मिक जीवन का निर्माण किया जा सकता है।

३. आध्यात्मिक जीवन की सिद्धि के लिये अपना सर्वांगीण विकास अपेक्षित है, इसमें सहायक होने वाली कोई भी साधना अभिनन्दनीय है।

४. प्रत्येक दशा में अपनी अनुभूति, अभिव्यक्ति एवं आचरण में सामंजस्य का बना रहना भी अनिवार्य है।

५. इस प्रकार की व्यक्तिगत साधना द्वारा ही क्रमशः आदर्श मानव समाज का निर्माण किया जा सकता है, जिसमें अन्त में विश्व कल्याण भी सम्भव है। इसकी सफलता के आधार पर ही यदि चाहें तो भूतल को स्वर्ग के रूप में भी परिणित किया जा सकता है। यही कबीर-पंथ है।

धनी धर्मदास जी साहब ने अपने उपदेशों के माध्यम से भारतीय जातियों और संस्कृतियों का समन्वय किया, उसी के कबीर पंथ का स्वरूप बना, जिसे वर्तमान में करोड़ों लोग स्वीकार करते हैं। इन स्वीकृतियों में से प्रथम ने जहां साम्यभाव अथवा विश्व-बन्धुत्व के आदर्श का मूल रूप प्रतिष्ठित किया वहीं उनकी दूसरी मान्यता ने प्रत्येक व्यक्ति का ध्यान स्वावलम्बन के महत्व की ओर भी आकृष्ट किया। इसी प्रकार उनकी तीसरी धारणा के अनुसार हमारे दैनिक जीवन के प्रत्येक व्यापार का समुचित मूल्यांकन आवश्यक समझा गया और चौथी के द्वारा हमें स्वयं लोकोन्मुख व्यक्तिगत जीवन के ही वास्तविक विकास की सच्ची कसौटी मिल गई। इन चारों दृष्टियों के अनुसार जीवन यापन करने वाले व्यक्ति स्वभावतः उस आदर्श मानव समाज के अंग हो जाते हैं जो उनकी पांचवी आस्था का आधार होता है।

इन पंच-सूत्रों का मूल स्त्रोत सत्संग एवं स्वानुभव में निहित है। इस कारण वह केवल मस्तिष्क की कोई उपज न होकर उनके प्रत्यक्ष जीवन में ही अपना स्थान बना लेती है। यह तत्व विविध तर्कों द्वारा अर्जित किये गये किसी दार्शनिक ज्ञान के सदृश्य नया प्रस्तुत, उनके हृदयों में जमें हुए धार्मिक विश्वास ही था। यह उनकी स्वानुभूति ही थी। इन दोनों साधकों का लक्ष्य भव-बन्धन से मुक्ति पा लेना था। इसे उन्होंने अपने जीवनकाल में सम्भव बनाया। साधक द्वय ने एक ओर जहां आध्यात्मवाद के आधार पर सच्चा तथा सहज साम्य भावना का प्रचार किया, वहां दूसरी ओर उन्होंने इसके द्वारा यह भी संकेत कर दिया कि हमारे ध्येय सदा अपने सिद्धांत एवं आचरण के बीच पूरी संगति बिठाने का ही होना चाहिये। कथनी एवं करनी में सामंजस्य

अवश्य ही होना चाहिये।

धर्मनि आमिन और उनके वंशजों ने कोरे निवृत्ति-मार्ग एवं कोरे प्रवृत्ति मार्ग को केवल एकांगी और एकपक्षीय ठहराया और मध्यम मार्ग को अपनाकर विवेक के साथ समझ बूझकर हंसवत चलने का उपदेश दिया। इस प्रकार कबीर-पंथ में वंश गद्दी के आदर्श व्यक्तिगत जीवन में एक ओर जहां साधारण कोटि के व्यक्तियों की सादगी है, वहां महान विचारों का गम्भीर चिन्तन भी है। उसी के अनुसार एक ओर जहां अपने व्यक्तित्व के समुचित विकास के लिये पर्याप्त अवसर उपलब्ध होता है, वहां विश्व कल्याण की दृष्टि से अथक प्रत्यत्न भी किया जा सकता है। वास्तव में निवृत्ति मूलक साधनाओं का इतिहास एक प्रकार से मनुष्य की वेदनाओं का इतिहास है, उसकी पीड़ा और बेचैनियों का इतिहास है।

धर्माचार्यों ने यह उपदेश दिया कि कामिनी से भागो, कंचन से भागो एवं सुयश और समादर को संदेह से देखो, क्योंकि ये लुभावनी ऋद्धियां तुम्हें घेरकर संसार में पचाने के लिये हैं। किन्तु व्यवहार में देखा जाता है कि जो कंचन से भागने में समर्थ होते हैं, वे कामिनी के आंचल में अपना मुंह छुपा लेते हैं और जो कामिनी के पाश से भी छूट जाते हैं, वे कीर्ति को नहीं छोड़ सकते। कुछ थोड़े ही लोग जरूर ऐसे हुए, जो किसी भी बन्धन में नहीं आ सके। किन्तु वे हमेशा अपवाद रहे। अपार मा बता तो आसक्ति वैराग्य तथा भोग और उपवास के बीच झटके ही खाती रही। यह भी अचरज की बात है कि मा बता की इस विपुल वेदना का समादार किसी भी धर्म ने नहीं किया।

धर्म दार्शनिक दृष्टि से प्रवृत्ति मूलक हो अथवा निवृत्ति मूलक, द्वैतवादी हो अथवा अद्वैतवादी घूम फिर कर वे यही सिखावना देते हैं कि भूत और आत्मा दो हैं- ये परस्पर मित्र नहीं शत्रु हैं तथा जो भूत को अपनाता है वह शैतान का शिष्य है। जिसे परमात्मा को पाना है, जिसे अपना परलोक सुधारना है, उसे द्रव्य से दूर और आत्मा के निकट रहना चाहिए। प्रवृत्ति और निवृत्ति का समन्वित आदर्श धनी धर्मदास जी साहब के जीवन में प्रकट हुआ, जिसका सारांश यह था कि घर से भाग कर जंगल में रहना बहुत बड़ा धर्म नहीं है। धर्म की परीक्षा संसार के भीतर की जाती है। सद्गुरु कबीर साहब ने कहा भी है-

एक जोग में भोग है, एक भोग में जोग।
एक बुड़हि बैराग्य में, एक राहो सो गृही लोग॥

इसीलिए वंश गुरु गृहस्थ रहकर भी बैराग्य निभा सकते थे जो गद्दी पाकर भी स्वभाव से सन्त होते हैं। जीवन सत्य है, संसार सपना नहीं, वैराग्य जीवन की पराजय को नहीं कहते तथा कर्माकर्म का विचार ऐसा नहीं होना चाहिए कि मनुष्य के इह लौकिक का ही नाश हो जाय, ये और ऐसे उपदेश वंश-गुरू हमेशा देते हैं। उनके अनुसार धर्म मनुष्य के भीतर निहित देवत्व का विकास है। धर्म न तो पुस्तकों में है, न धार्मिक सिद्धांतों में, वह केवल अनुभूति में निवास करता है। धर्म विश्वास नहीं, धर्म अलौकिकता में नहीं- वह जीवन का अत्यन्त स्वभाविक तत्व है, मनुष्य में पूर्णता की इच्छा है, अनन्त जीवन की कामना है, ज्ञान और आनन्द प्राप्त करने की चाह है। पूर्णता ज्ञान और आनन्द, ये निचले स्तर पर नहीं है, उनकी खोज जीवन के उच्च स्तर पर की

जानी चाहिए, जहाँ ऊँचा स्तर आता है वहीं धर्म का आरम्भ होता है।

जीवन का स्तर जहां हीन है, इन्द्रियों का आनन्द वहीं अत्यन्त प्रखर होता है। इसीलिये निरन्तर सावधानी बरतना आवश्यक है। जीवन जिसे खोज रहा है, मनुष्य जिसे प्राप्त करके शान्ति लाभ करता है - वह पदार्थ संसार के बाजार में नहीं मिलता, उसे जीवन की गहराई में डूब कर ही पाया जा सकता है। इसलिये वंश गद्दी में आग्रह किसी बात को अपने निजी जीवन में लाकर उसे स्वयं परख लेने पर है। कोई भी मनुष्य इस संसार से विमुख होकर पूर्णता नहीं प्राप्त कर सकता। कर्म का त्याग ही वरन निष्कर्म भाव से किया गया कर्म सुख और आनन्द प्रदान करता है। आसक्ति से रहित, अहंभाव से हीन, धैर्ये तथा शक्ति युक्त और कार्य के सिद्ध होने और न होने में हर्ष शोकादि विकारों से रहित कर्मठ व्यक्ति ही सात्विक व्यक्ति कहा जा सकता है।

कबीर-पंथ में धर्मदास वंशानुयायी वही हैं, जो किसी से ईर्ष्या नहीं करता, जो दया का सागर है, जो अहंकार रहित है, जो निःस्वार्थ है, जो सर्दी और गर्मी, सुख और दुख दोनों के प्रति समुचित रहता है, जो सदा क्षमावान है, जो सदा सन्तुष्ट है, जिसका संकल्प दृढ़ है, जिसने अपने मन और आत्मा को ईश्वर को अर्पित कर दिया है, जो किसी में भय उत्पन्न नहीं करता, जो दूसरों से भयभीत नहीं होता, जो आह्लाद दुःख और सुख से मुक्त है, जो शुद्ध है, जो कर्म में पटु (प्रवीण) है किन्तु आसक्त रहित, जो बले और बुरे सभी फलों को त्याग देता है, जो शत्रु और मित्र से समता का व्यवहार करता है, जो आदर अथवा अनादर से विचलित नहीं होता, जो प्रशंसा सुनकर फूल नहीं उठता, जो अपनी बुराई सुनकर मर्माहत नहीं होता, जो शान्ति और एकान्त पसन्द करता है और जिसने अपने तर्क बुद्धि को अनुशासित कर लिया है ऐसा भक्त अनुयायी के साथ गहन आसिन्त का रहना असंगत है।

वंश-घर में आत्मा को बुरे कर्मों से उत्पन्न बुरे प्रभावों से मुक्त करना आवश्यक माना जाता है। यदि एक ही जीवन में आत्मा इन बुरे कर्मों के प्रभाव से मुक्त होती थी, तो उसे दुबारा इस संसार में लौटना पड़ता है। पुनर्जन्म में विश्वास, कर्मसिद्धांत के बुनियादी उस परिणामों में से एक है। केवल सत्कर्मों से ही आत्मा अपने को जन्म और मृत्यु चक्र से मुक्त कर सकती है। जन्म, मृत्यु और पुनर्जन्म के अनन्त कालीन चक्र से उत्पन्न सासांरिक पीड़ाओं से छुटकारे को ही मोक्ष माना जाता है। मोक्ष ही शाश्वत आनन्द की स्थिति है। अनवरत प्रार्थना और भक्ति से इस मानव शरीर को भगवान का बसेरा बना दिया जाता है। परमात्मा के लिये घनिष्ट प्रेम और आत्मार्पण को ही सब कुछ माना जाता है, धनी धर्मदास जी साहब के वंश-घर में केवल मोक्ष का नहीं बल्कि चारों पुरुषार्थों को महत्व दिया गया है। धर्म, अर्थ और काम तो तुरन्त ही अर्जन करने योग्य है, क्योंकि इसका सम्बन्ध हमारे दैनिक जीवन से ही है। अन्तिम पुरुषार्थ (मोक्ष) हमारे तीनों कार्यों पर आधारित है -

धर्म - इसमें हमारे वे सभी कर्तव्य सम्मिलित हैं, जो भिन्न-भिन्न धार्मिक, सामाजिक या नैतिक मान्यताओं से सम्बन्ध रखते हैं। प्रत्येक परिस्थिति में मनुष्य का क्या-क्या कर्तव्य होना चाहिये, यह सब धर्म शब्द के अन्तर्गत आ जाता है। हमारे शास्त्रों में आचरण को भी धर्म में स्थान दिया गया है। धर्म उन उपयोगी सिद्धांतों का समूह है जो हमारे दैनिक जीवन और समस्याओं का हल करता है धर्म तो जगत को स्वर्ग बनाने वाले, समाज में से गरीबी और अज्ञान तथा शोषण का अन्त करने वाले उत्साही व्यक्तियों के हाथ में सुरक्षित रह

सकता है। धर्म जीवन और समाज को जागृत करता है।

अर्थ - इससे ही समाज में हमारी स्थिति और मान्यता रहती है। धन एक पवित्र शक्ति है। धन का व्यय शुभ सात्विक कार्यों में होना चाहिए और उसे इमानदारी से कमाना चाहिये। गृहस्थ जीवन को सुखमय बनाने के लिये 3अर्थ2 शक्ति की जरूरत है, शेष आश्रम इसी गृहस्थ आश्रम के आश्रय में रहते हैं। गृहस्थों का यह पुण्य कर्तव्य हो जाता है कि वह सत्य आचरण द्वारा सात्विक कमाई करे और स्वयं अपने तथा समाज के लिये कल्याणकारी कार्यों में उसका उपयोग करता रहे।

काम - काम का उदय मन में होता है। इसलिये काम को मनसिज कहा गया है। काम के दो भेद हैं-

१. वासना जन्य कामेच्छा जिसकी शर्तें विवाहित जीवन में होती है।

२. भगवत प्रेम, जिसकी पूर्ति ईश्वरोपासना में होती है और जो मुक्ति का कारण बनती है। धर्माचरण की मर्यादा में रहकर एक पुरुष एक ही स्त्री से काम सम्बन्ध स्थापित करता है, तो संयम और मर्यादा का ध्यान रहता है। असंयमित काम को हेय समझा जाता है और व्यभिचार की संज्ञा दी जाती है। गृहस्थ जीवन में संयम और इन्द्रिय निग्रह का सदा ध्यान रखना चाहिये तथा भगवद् भक्ति द्वारा अपनी वासना को निकालने के लिये कल्याणकारी मार्ग अपनाना चाहिये इस प्रकार ऊँचे उठकर परमात्मा की प्राप्ति में संलग्न हो जाना चाहिये। धनी धर्मदास जी साहब के वंश इसी उच्चादर्श के गृहस्थ हैं।

मोक्ष - मानव जीवन की एक ऐसी स्थिति की योजना है, जिसमें मनुष्य सुख शान्ति की चरमावस्था को प्राप्त होता है, जहां इसके आत्म तत्व को पूर्ण सुख सन्तोष की प्राप्ति हो जाती है। सब सांसारिक, सामाजिक और आर्थिक बन्धनों से छुटकारा प्राप्त हो जाता है। विषय, तृष्णा, द्वेषलोलुपता, अभिमान, दम्भ, लोभ, प्रतिशोध, प्रतिद्वन्द्विता, द्वेष, झूठी निन्दा, असत्य भाषण, चोरी, धोखेबाजी, क्रूरता, डाह (ईर्ष्या) ये वे पिशाचिक मोहान्द मनोवृत्तियां है जो इस संसार में ही मनुष्य को नर्क मनःस्थिति में डाले रहती है। मोक्ष की स्थिति में पहुंचकर मनुष्य इन राक्षसी बन्धनों से मुक्त हो जाता है। इस प्रकार धर्म संसार में मनुष्य की बुद्धि भावना और श्रद्धा का सर्वोत्तम रूप है। ज्ञान और श्रद्धा के प्रकाश में विशेषतः भक्ति के सुलभ राजमार्ग से जितना भी हो सके अपने स्वधर्मानुसार कर्तव्य का पालन करते रहना चाहिए। निष्काम भाव से मरण पर्यन्त अपने धार्मिक कर्तव्यों को निभाना चाहिए। इसी में मनुष्य का सांसारिक और परिलौकिक कल्याण है।

धर्म का मार्ग ही श्रेष्ठतम है। धर्म संसार के महात्माओं के जीवन का सार है - नवनीत हैं। मनुष्य में ही स्वर्ग और नर्क विद्यमान होते हैं। ये मन के दो स्तर हैं। मनुष्य के मन में स्वर्ग की स्थिति वह है, जिसमें देवत्व के सद्गुणों का पावन प्रकाश होता है। दया, प्रेम, करुणा, सहानुभूति, उदारता की धाराएं बहती है। यही मानसिक मार्ग कल्याणकारी है। अतः इसे स्वर्ग की स्थिति भी कहा जा सकता है। दूसरी मनःस्थिति वह है, जिसमें मनुष्य उद्वेग, चिन्ता, भय, तृष्णा, प्रतिशोध, दम्भ आदि राक्षसी वृत्तियां मनुष्य को अन्धकूप में डाल देती है। अनुताप और क्लेश की काली और मनहूस, मानसिक तसवीरें चारों ओर दिखाई देती है। अन्तर्जगत यन्त्रणा से व्याकुल रहता है। कुछ भी अच्छा नहीं लगता। शोक-संताप और विलाप की प्रेतों जैसी आकृतियां

अशांत रखती है। यही नर्क की स्थिति है। इस प्रकार इस जगत में रहते हुए मानव जीवन में ही हमें स्वर्ग और नर्क के सुख-दुख प्राप्त हो जाते हैं। धर्म हमें नर्क से छुटकारा दिलाकर स्वर्ग पहुंचा देता है।

धनी धर्मदास जी साहब मुक्ति का दरवाजा सबके लिये खोलते हैं और कहते हैं कि गृहस्थी का काम करते हुये भी आदमी मोक्ष पा सकता है। सत्य और मुक्ति का एक सुलझा हुआ रूप वंश गद्दी में ही प्रगट होता है। धर्म सम्पूर्ण जीवन की पद्धति है, वह नश्वर में अनिश्वर तथा अचिर में चिर का अनुसंधान है। धर्म जीवन का स्वभाव है ऐसा नहीं हो सकता कि हम कुछ कार्य तो धर्म की उपस्थिति में करें और शेष कार्यों के समय उसे भुला दें। धर्म, ज्ञान और विश्वास से अधिक कर्म और आचरण में बसता है। यदि हम सत्य पुरुष के अस्तित्व में विश्वास करते हैं तो हमारे आचरण में इस विश्वास का प्रमाण मिलना ही चाहिए।

धनी धर्मदास जी साहब ने जीवन मन्थन कर जो नवनीत निकाला है, उससे मूलभूत सिद्धांतों में वह कोई दोष नहीं मिलता जो अन्य सम्प्रदायों या मत मजहबों में मिल जाता है। वंश घर में प्रचलित धर्म, महान मानव-धर्म है, व्यापक हैं और समस्त मानव मात्र के लिये कल्याणकारी है। वह अनुयायियों में ऐसे भाव और विचार जागृत करता है, जिन पर आचरण करने से मनुष्य और समाज स्थायी रूप से सुख और शांति का अमृत घूँट पी सकता है। इस घर में आदिनाथ के मूल सिद्धांत है, जिनको जीवन में ढालने से आदमी सच्चे अर्थों में मनुष्य बन सकता है। हम मनुष्यों की पूजा करें। मनुष्य को मनुष्य नहीं ईश्वर रूप मानें, सभी को ईश्वर रूप परमात्मा रूप समझें और इस प्रकार मनुष्य की उपासना करें तो यह ईश्वर की ही उपासना होगी। जो कोई हमारे पास आये, ईश्वर समझकर हमें उसका स्वागत करना चाहिए। अपने अन्दर से हमें अमृत का प्रवाह बनाना चाहिए, जिससे दूसरे भी अपने अपने व्यक्तित्व को अधिकाधिक विकसित करें।

वंश गद्दी का मूलमन्त्र है, 34हे मनुष्यों अपने हृदय में विश्व-प्रेम की ज्योति जला दो। सबसे प्रेम करो। अपनी भुजाएं पसार कर प्राणी मात्र को प्रेम के पाश में बांध लो। विश्व के कण-कण को अपने प्रेम की सरिता से सींच दो22 विश्व-प्रेम वह रहस्यमय दिव्य रस है, जो एक हृदय से दूसरे को जोड़ता है। वंश-गुरू आदिनाम से मुक्त होकर वह अपनी गतिशील स्थिति से चारों ओर की परिस्थिति को प्रभावित करता है। उसके सम्पर्क में आने वाले व्यक्ति इस प्रकाश का अनुभव करते हैं और इधर-उधर चलने के लिये उन्मुख होते हैं। दिव्यता का आविर्भाव और उसका प्रभाव ऐसा ही होता है। वास्तव में वंश घर में योग्य बनना आवश्यक है, इच्छुक बनना नहीं।

वंश गद्दी एक प्रकाश का मार्ग है जो सभी प्रकार के अज्ञान व अन्धकार को दूर कर देना चाहता है। इस प्रकाश के समक्ष कोई अंधविश्वासी नहीं ठहर सकता। यह गद्दी नैतिक नियमों को परिवर्तित कर देना नहीं चाहता, क्योंकि नैतिक बल ही जीवन में सभी प्रकार की सफलता का आधार है।

(पिव बड़ सुन्दर सखी - से साभार)

●●